17 नवम्बर 2016, कुल पृष्ठ : 32, मूल्य 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

# जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

वर्ष : 39, अंक : 16
नवम्बर (द्वितीय),2016 (वीर नि.सं.-2543)
सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल
सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल
आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

## स्वर्ण जयन्ती महोत्सव विशेषांक

## प्रवचन सुनते हुए साधर्मीजन

ब्र.सुमतप्रकाशजी
खनियांधाना

पण्डित अभयजी शास्त्री
देवलाली

पण्डित शांतिकुमारजी पाटील
जयपुर

पण्डित प्रदीपजी झांझरी
उज्जैन

पण्डित राजेन्द्रकुमारजी
जबलपुर

डॉ.संजीवजी गोधा
जयपुर

पण्डित संजयजी
मंगलायतन

पण्डित अनिलजी शास्त्री
भिण्ड

पण्डित कमलचंदजी
पिड़ावा

पण्डित विपिनजी शास्त्री
मुम्बई

17 नवम्बर 2016, कुल पृष्ठ : 32, मूल्य : 2/-    आर. एन. आई. 31109/77    JaipurCity / 224 / 2015-17

# जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI
प्रतिदिन
प्रात: 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 39, अंक : 16
नवम्बर (द्वितीय),2016 (वीर नि.सं.-2543)
सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल
सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल
आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

**शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत आयोजित -**

## श्री समयसार विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर अत्यंत धूमधाम से संपन्न

- श्री समयसार महामंडल विधान का भव्य आयोजन
- देश-विदेश से 1008 इन्द्र-इन्द्राणी विधान में सम्मिलित
- इतिहास का सबसे बड़ा 1000 विद्वानों का महासम्मेलन
- अ.भा.जैन युवा फैडरेशन का राष्ट्रीय अधिवेशन
- अ.भा.दिग. जैन विद्वत्परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन
- ''टोडरमल से टोडरमल स्मारक तक'' नामक नाटक
- पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् का सम्मेलन
- टोडरमल स्मारक पर आधारित डॉक्यूमेन्ट्री का प्रदर्शन
- मुम्बई के प्रोफेशनल रंगमंच के कलाकारों द्वारा वैराग्य महाकाव्य पर नाट्य प्रस्तुति
- अध्यात्म की गंगा में किया 10,500 साधर्मियों ने स्नान
- गौरव सौगानी जयपुर द्वारा आध्यात्मिक भजन संध्या
- विशिष्ट महानुभावों एवं प्रमुख मुमुक्षु संस्थाओं का सम्मान
- पर्वतराज की सामूहिक वंदना

**सम्मेदशिखरजी (झारखंड) :** यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्वर्ण जयंती के अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित श्री समयसार विधान 1008 इन्द्र-इन्द्राणियों द्वारा रविवार, दिनांक 9 अक्टूबर से शुक्रवार, दिनांक 14 अक्टूबर, 2016 तक टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के 18वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित अत्यंत धूमधाम से संपन्न हुआ।

**भव्य जिनेन्द्र रथयात्रा -** दिनांक 9 अक्टूबर को भव्य जिनेन्द्र रथयात्रा के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। रथयात्रा कुन्दकुन्द कहान नगर से प्रारम्भ होकर समारोह स्थल पर पहुंची। रथ में श्रीजी विराजमान करने का सौभाग्य श्री संजयजी कोठारी परिवार मुम्बईवालों को प्राप्त हुआ। श्रीजी के रथ के सारथी थे श्री कैलाशचंदजी छाबड़ा मुम्बई तथा धर्मध्वजा लेकर चलने वाले श्री अभयकुमार जैन औरंगाबाद थे। शोभायात्रा में केशरिया वस्त्रों में 51 कलश एवं 51 जिनवाणी लेकर महिलाएं पंक्तिबद्ध शोभायमान थीं। श्वेतवस्त्र में पुरुषवर्ग आध्यात्मिक स्वर लहरियों को गुंजायमान कर रहे थे।

**उद्घाटन समारोह -** सभा स्थल पर श्रीजी का अभिषेक देखकर उपस्थित जनसमुदाय हर्षविभोर था। अभिषेक के उपरान्त श्री कांतिभाई मोटानी एवं श्री विपुलभाई मोटानी परिवार मुम्बई द्वारा ध्वजारोहण एवं श्री चक्रेशकुमार अशोककुमार सुशीलकुमार बजाज परिवार कोलकाता द्वारा भव्य मण्डप व मंच के उद्घाटन की विधि संपन्न की गई। शिविर उद्घाटनकर्त्ता श्री नरेशजी लुहाड़िया परिवार दिल्ली थे। पण्डित अभयकुमारजी के मंगलाचरणोपरान्त

(शेष पृष्ठ 3 पर...)

सम्पादकीय –

## संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

''देखो विज्ञान ! प्रवचन के बीच में बोलना ठीक नहीं है। क्या तुम पहली बार ही प्रवचन में आये हो ? प्रवचन के बीच में बोलने से प्रवचन की धारा टूट जाती है। अस्तु : हाँ तो सुनो ! – मैं चाँटे-काँटे की कहानी कह रहा था –

''एक बालक था, वह चंचल तो था ही, नासमझ भी था। वह जब देखो तभी अपनी बड़ी बहिन सरला से लड़ता-झगड़ता रहता था। कभी-कभी तो उसे मारपीट भी देता था। इसकारण उसकी माँ बहुत परेशान रहती थी। कभी-कभी माँ को उस पर गुस्सा तो इतना आता कि यदि उसका वश चले तो वह चाँटों से उसकी अच्छी मरम्मत कर दे, पर माँ तो आखिर माँ ही होती है। कुछ ही देर में उसका गुस्सा ठंडा हो जाता और बात आई-गई हो जाती।

एक दिन माँ-बेटे दोनों बाजार जा रहे थे, बेटा नंगे पैर था, क्योंकि वह अपने जूते-चप्पल खो देता था। माँ करे तो करे भी क्या ? उस भुलक्कड़ व लापरवाह लड़के को रोज-रोज कितने जूते-चप्पल पहिनाये। रास्ते में अनायास लग गया एक काँटा। बेटा वहीं बैठकर रोने लगा।

उसे रोते देख माँ को विचार आया –''आज अच्छा मौका है। जब काँटा लग ही गया तो चाँटों का काम काँटे से ही क्यों न ले लिया जाये ?''

बेटे ने रोते-रोते माँ से पूछा –''माँ मुझे काँटा क्यों लगा ?''

माँ बोली –''बेटा तू अपनी बड़ी बहिन को गाली देता है न ? मारता-पीटता भी है। बस, इसी कारण तुझको काँटा लगा है।''

बेटा बोला –''अच्छा माँ मैं आज से कभी गाली नहीं दूँगा, फिर तो काँटा नहीं लगेगा ?''

माँ बोली –''बेटा ! काँटा तुम जैसा पागल थोड़े ही है, जो बिना बात किसी को परेशान करे।''

उस दिन से बालक ने अपनी बड़ी बहिन को ही क्या सभी को मारना-पीटना और गाली-गलौच करना छोड़ दिया।

यद्यपि काँटे से गाली-गलौच और मारपीट का कोई संबंध नहीं था, तथापि माँ ने अपनी बुद्धिमानी से यदि काँटे के लग जाने मात्र से बेटे की बुरी आदत छुड़ा दी तो सद् अभिप्राय होने से माँ का यह कथन असत्य नहीं है। बुरी आदत छुड़ाने को चाँटे नहीं मारना पड़े, चाँटों का काम उस काँटे ने ही निबटा दिया, जो कि अचानक उसे लग गया था। सही अभिप्राय होने से ऐसा करना जिस तरह लोक में अनुचित नहीं माना जाता, उसी तरह मोक्षमार्ग में भी ऐसा कथन करने की एक शैली है, जिसका नाम प्रथमानुयोग है। इस अनुयोग का मूल प्रयोजन पापी व अज्ञानी जीवों को पापचरण से हटाने और मोक्षमार्ग में लगाने का है। एतदर्थ कभी-कभी किसी एक के फल को किसी अन्य का भी कह दिया जाता है।

प्रथमानुयोग में केवल प्रयोजन की मुख्यता से कथन होता है। इस प्रकरण में केवल इतना प्रयोजन है कि जो लौकिक कामनाओं की पूर्ति के लिये अन्य मत-मतान्तरों द्वारा पीर-पैगम्बर या रागी-द्वेषी व अल्पज्ञ देवी-देवताओं की शरण में चले जाते हैं। वे वहाँ जाकर गृहीत मिथ्यात्व में न पड़े, णमोकार मंत्र द्वारा पंचपरमेष्ठी का स्वरूप पहिचानकर वीतराग सर्वज्ञ परमात्मा व उन्हीं के पथानुगामी साधुओं की शरण में आएँ, ताकि वे गृहीत मिथ्यात्व के महापाप से बच सकें और सच्ची बात समझने के निमित्तों से दूर न हो जावे।''

(क्रमशः)

## अद्भुत ! अकल्पनीय !! अविस्मरणीय !!!

– पीयूष शास्त्री, जयपुर

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्वर्ण जयंती के अवसर पर दिनांक 9 से 14 अक्टूबर तक शाश्वत तीर्थक्षेत्र सम्मेदशिखर में आयोजित समयसार विधान का भव्य आयोजन आने वाले अनेक दशकों तक के लिये जन-जन के स्मृति पटल पर अपनी एक अमिट छाप छोड़ गया।

कुछ एक पंचकल्याणकों को छोड़ दें तो उपस्थिति की दृष्टि से यह आयोजन मुमुक्षु समाज का विशालतम आयोजन रहा। मात्र विधान के लिये इतने जनमानस का एकत्र हो जाना तो अद्भुत अनुभव रहा ही, इसमें भी ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह थी कि इतना बड़ा जनसमुदाय मात्र ज्ञानपिपासा के साथ आत्मानुशासन और साधर्मी वात्सल्य की भावना से ओतप्रोत था।

तीर्थराज सम्मेदशिखर में इतनी भीड़ को भोजन/आवास/यातायात आदि की सभी व्यवस्थाओं को समुचित रूप से संपादित कर पाना भी किसी चुनौती से कम नहीं था; पर जहाँ सभी लोग सबके सहयोग की भावना से जुटे हों, वहाँ हर मुश्किल आसान होती गई। मुमुक्षु समाज की इस परस्पर सहयोग की भावना को देख सभी हर्षित थे। 1000 से भी अधिक विद्वानों का अद्भुत समागम जिसने अपनी आँखों से देखा देखता ही रह गया।

अद्भुत ! अकल्पनीय !! अविस्मरणीय !!! यही उपमायें इस आयोजन के लिये उपयुक्त हैं। ●

(पृष्ठ 1 का शेष...)

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा संस्था का परिचय व समागत अतिथियों के सम्मान में स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया। आपने अपने वक्तव्य में कहा कि इस भौतिकवादी युग में 50 वर्ष तक अध्यात्म की अलख जगाना कोई साधारण बात नहीं है। स्वरचित स्वर्ण जयंती गीत को आपने स्मारक की रीति-नीति का दस्तावेज घोषित करते हुए उन्होंने आत्मकल्याण को एकाकी प्रक्रिया एवं तत्त्वप्रचार को सामूहिक गतिविधि निरुपित किया। आपने अपनी बात को आगे बढाते हुए कहा कि वीतरागता के अतिरिक्त हम कहीं मस्तक नहीं झुका सकते। हमारा मस्तक कहाँ झुके इसका निर्णय हम करेंगे, पर अपने सिद्धांतों पर अडिग रहते हुए हम अपने सिद्धांतों को सामाजिक विघटन का कारण नहीं बनने देंगे। सभा के विशिष्ट अतिथि महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोकजी बड़जात्या थे, उन्होंने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि **'टोडरमल स्मारक अध्यात्म जगत में विश्व का सर्वाधिक सशक्त व ऊर्जावान क्षेत्र है, जिसने अन्तर्विरोधों के बावजूद अपनी 24 कैरेट शुद्धता बरकरार रखी है। गुरुदेवश्री के अवसान से उत्पन्न शून्य को भरने में टोडरमल स्मारक का महत्वपूर्ण योगदान है।'**

सभा के मुख्य अतिथि श्री अजितप्रसादजी दिल्ली ने कहा कि यह भव्य आयोजन पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव से भी बड़ा प्रतीत हो रहा है। इसके अतिरिक्त श्री कांतिभाई मोटानी व श्री विमलजी नीरु केमिकल्स दिल्ली ने भी सभा को सम्बोधित किया। श्री अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल ने स्वरचित कविता पाठ किया, जिसे उपस्थित जनसमूह से भूरी-भूरी सराहना मिली। सभा की अध्यक्षता कर रहे श्री राजेशजी जैन पुष्पांजलि दिल्ली द्वारा 'अध्यात्म गीत' नामक भजनों की पुस्तक का विमोचन किया गया। श्री शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल ने आयोजन का इतिहास प्रस्तुत करते हुए कोलकाता मुमुक्षु मण्डल के रचनात्मक सहयोग की मुक्तकंठ से सराहना की तथा सुरेशजी पाटनी, सुशीलजी बजाज (मुन्नाभाई) व भरतभाई टिम्बडिया की 150 सदस्यीय टीम का सहयोग के लिये आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर समागत अतिथियों का माल्यार्पणकर स्वागत श्री अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल (ट्रस्टी) ने किया व श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल ने अंगवस्त्र भेंट किया। मंच पर लगे आचार्य कुन्दकुन्द के चित्र का अनावरण श्री नितिन सी.शाह मुम्बई, अमृतचंद्राचार्य के चित्र का अनावरण श्री प्रकाशचंदजी कैलाशचंदजी सेठी परिवार जयपुर, पण्डित टोडरमलजी के चित्र का अनावरण श्री दीपकभाई दोशी मुम्बई एवं स्वर्णपुरी (सोनगढ) के साथ गुरुदेवश्री के चित्र का अनावरण श्री रमेशचंद सौगानी परिवार कोलकाता द्वारा किया गया। टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में विराजित पंचमूर्ति की प्रतिकृति का उद्घाटन श्री नरेशजी लुहाड़िया परिवार दिल्ली द्वारा किया गया।

अंत में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने पण्डित प्रवर टोडरमलजी के नेतृत्व में किये गये इन्द्रध्वज विधान का उल्लेख करते हुए बताया कि उक्त इन्द्रध्वज विधान ही इस विधान का आधार सूत्र है। चूंकि अब इन्द्रध्वज विधानों के आयोजन बहुतायत होने लगे हैं, अत: समयसार विधान करने का भाव जागृत हुआ। इसके लिये इस समयसार विधान की रचना की गई। इसकी एक-एक पंक्ति में रहस्य भरा हुआ है। आपने कहा कि 80 वर्ष तक मैंने जो भी ग्रहण किया है, इन 5-6 दिनों में वह सब मैं आपको दे जाना चाहता हूँ।

दैनिक कार्यक्रमों की जानकारी पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने दी एवं आभार प्रदर्शन श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

सभा का संचालन पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई द्वारा किया गया।

**प्रवचन** – शिविर में प्रतिदिन प्रात:काल गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समयसार की 73वीं गाथा पर सी.डी. प्रवचन एवं प्रश्नोत्तर हुए। तत्पश्चात् ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा सल्लेखना, जिनपूजन का यथार्थ स्वरूप एवं अकर्त्तावाद विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये। डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों के पूर्व पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन आदि

विद्वानों द्वारा ग्रंथाधिराज समयसार पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

रात्रिकालीन प्रवचनों में प्रतिदिन ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा समयसार के परिशिष्ट के आधार से ज्ञानस्वभाव पर हुए प्रवचनों के पूर्व पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई आदि विद्वानों के समयसार ग्रंथ पर हुये व्याख्यानों का लाभ मिला।

प्रात: 5.45 प्रौढ कक्षा में प्रतिदिन पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा के व्याख्यान का लाभ मिला। श्री जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् जिनवाणी चैनल पर डॉ. भारिल्लजी के समयसार पर प्रवचन एवं अरहंत चैनल पर पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के पुरुषार्थसिद्धयुपाय पर प्रवचनों के प्रसारण हुये।

प्रात:, दोपहर एवं सायंकाल बालकक्षायें डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा आयोजित की गईं। श्री आराध्य टडैया ने कक्षाओं में अध्यापन कार्य किया। सायंकाल श्री जिनेन्द्र-भक्ति का भी आयोजन किया गया।

आयोजन के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्री अजितप्रसाद वैभवकुमार जैन परिवार दिल्ली एवं विधान के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती कुसुम जैन ध.प. विमलकुमारजी जैन नीरू केमिकल दिल्ली थे।

मुख्य मंगल कलश विराजमानकर्त्ता श्रीमती कुसुम जैन ध.प. विमलकुमारजी जैन नीरू केमिकल्स दिल्ली, श्री सुरेशचंद जी जैन शिवपुरी, श्रीमती स्नेहलता ध.प. जैन बहादुर जैन कानपुर, श्रीमती शशि ध.प. सेठ गुलाबचंद जैन सागर, श्रीमती अर्चना ध.प. सेठ सुधीर जैन कटनी थे।

श्री समयसार महामंडल विधान का आयोजन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के मुख्य प्रतिष्ठाचार्यत्व में सर्वश्री राजकुमारजी उदयपुर, अजितजी अलवर, ऋषभजी छिन्दवाड़ा, धर्मेन्द्रजी कोटा, मनीषजी पिड़ावा, विवेकजी इन्दौर, ब्र.श्रेणिकजी जबलपुर, ब्र. नन्हे भैया सागर, ब्र. मनोजजी जबलपुर, सुबोधजी ग्वालियर आदि के सहयोग से संपन्न किया गया।

इस संपूर्ण आयोजन में देशभर से पधारे 10 हजार 500 साधर्मियों को किसी भी प्रकार की कठिनाई/प्रतिकूलता नहीं हुई-यह उल्लेखनीय उपलब्धि रही।

संपूर्ण आयोजन की अतिशय सफलता का सम्पूर्ण श्रेय डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के कुशल नेतृत्व व निर्देशन को ही जाता है। उनके अतिरिक्त अन्य समस्त पदाधिकारियों के साथ सर्वश्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, विपिनजी जैन शास्त्री, शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री सुरेशजी पाटनी, श्री भरतभाई टिम्बडिया, श्री सुशीलकुमारजी बजाज (मुन्नाभाई), महिपालजी ज्ञायक, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, श्री अखिलजी बंसल, श्री रूपेन्द्रजी शास्त्री, श्री विवेकजी शास्त्री इन्दौर, श्री सर्वज्ञजी भारिल्ल एवं टोडरमल स्नातक परिषद् के स्नातकों के साथ-साथ टोडरमल सिद्धांत महाविद्यालय के विद्यार्थी और कोलकाता मुमुक्षु मण्डल के उत्साही कार्यकर्ताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

**समापन समारोह** – शिविर के समापन समारोह में शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुये पण्डित विपिनजी शास्त्री एवं पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कहा कि शिविर में 15 विद्वानों के माध्यम से लगभग 10 हजार 500 साधर्मियों ने प्रतिदिन 16 घंटे तक चलने वाले तत्त्वज्ञान के कार्यक्रमों का लाभ लिया। हजारों घंटों के सी.डी./ डी.वी.डी. प्रवचन तथा हजारों रुपयों का सत्साहित्य घर-घर पहुंचा। ●

## सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम

**सम्मेदशिखरजी (झारखंड) :** यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्वर्ण जयंती के अवसर पर 18वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अन्तर्गत प्रतिदिन रात्रि में प्रवचनोपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही।

दिनांक 9 अक्टूबर को श्री टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों द्वारा टोडरमल से टोडरमल स्मारक तक नामक नाटक किया गया, जिसके मुख्य अतिथि श्री नरेशजी पाटोदी कोलकाता एवं विशिष्ट अतिथि श्री संजयजी कासलीवाल कोलकाता थे।

दिनांक 10 अक्टूबर को विख्यात गायक डॉ. गौरव जैन सौगानी एवं दीपशिखा जैन, जयपुर द्वारा आध्यात्मिक भजन संध्या का आयोजन हुआ, जिसके मुख्य अतिथि श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ एवं विशिष्ट अतिथि श्री जयन्तीलालजी मूथा कलकत्ता थे।

दिनांक 11 अक्टूबर को टोडरमल स्मारक भवन पर आधारित डॉक्यूमेन्ट्री का प्रदर्शन हुआ, जिसका उद्घाटन श्री अजितजी जैन बड़ौदा ने किया। ज्ञातव्य है कि लगभग 1 घण्टे की इस डॉक्यूमेन्ट्री का निर्माण एवं संयोजन कु. मुक्ति जैन, मुम्बई ने लगभग 1 माह के अथक् परिश्रम से किया।

दिनांक 12 अक्टूबर को मुम्बई के प्रोफेशनल रंगमंच के कलाकारों द्वारा वैराग्य महाकाव्य पर नाट्य प्रस्तुति का आयोजन किया गया, जिसके मुख्य अतिथि श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा एवं श्री प्रकाशचंदजी सेठी जयपुर परिवार थे।

# विद्वत्परिषद् का राष्ट्रीय सम्मेलन

**सम्मेदशिखरजी (झारखंड) :** यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्वर्ण जयंती के अवसर पर 18वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अन्तर्गत दिनांक 11 अक्टूबर को अ.भा.दि. जैन विद्वत्परिषद् का राष्ट्रीय सम्मेलन सहस्राधिक विद्वानों की उपस्थिति में आयोजित हुआ।

सभा की अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। समारोह के मुख्य अतिथि श्री रमेशजी सोगानी कलकत्ता तथा विशिष्ट अतिथि दिलीपजी सेठी कलकत्ता थे। समागत सभी अतिथियों का तिलक एवं माल्यार्पण द्वारा स्वागत परिषद् के प्रकाशन मंत्री डॉ. संजीवकुमारजी गोधा एवं कार्यकारिणी के सदस्य श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

इस अवसर पर श्री अखिल बंसल (महामंत्री) ने विद्वत्परिषद् की स्थापना से लेकर अभी तक परिषद् की उपलब्धियों, साहित्य प्रकाशन, संगोष्ठियों एवं समयसार वाचना आदि पर प्रकाश डाला। डॉ. राजेन्द्र कुमार बंसल (कार्याध्यक्ष) ने इतिहास और संस्कृति के महत्व को दर्शाते हुए कक्षा 6 की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में भगवान महावीर के संबंध में भ्रांत धारणाओं के सुधार करवाने, जैनदर्शन के मूल सिद्धांतों का समावेश करवाने संबंधित विवरण प्रस्तुत किया और प्राकृत भाषा के विकास हेतु प्राकृत/अपभ्रंश अकादमी की स्थापना हेतु प्रयासों का उल्लेख किया। इसके पश्चात् डॉ. बंसल ने पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं सोनगढ ट्रस्ट की उपलब्धियों का उल्लेख कर उनका अभिनन्दन किया।

विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष डॉ.भारिल्ल की भावनाओं का अनुमोदन करते हुए विद्वत्परिषद् की कार्यकारिणी समिति ने कुण्डलपुर-दमोह मंदिर की पूर्णता हेतु दिगम्बर जैन समाज की सभी संस्थाओं, मंच (जैन संस्कृति रक्षा मंच), विद्वत्गण और समाज से अनुरोध किया कि सद्भावपूर्वक सर्वमतभेद विस्मृतकर और कानूनी बाधाएँ समाप्तकर सहयोग प्रदान करें और भगवान महावीर की दिगम्बर जैन मूल आम्नाय की परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने में सहयोग प्रदान करें। उपस्थित 10 हजार के जनसमूह ने डॉ. बंसल के उक्त प्रस्ताव का करतल ध्वनि से अनुमोदन किया। इस कार्यक्रम का प्रसारण (टेलिकास्ट) विश्वभर में हुआ।

डॉ. भारिल्ल ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में राष्ट्रीय विद्वत्परिषद् की उपयोगिता और उसके कार्यों पर प्रकाश डालते हुए डॉ. राजेन्द्र बंसल के इतिहास, शोध और भगवान महावीर की जन्मभूमि वासोकुण्ड-वैशाली की सिद्धि में उनके प्रयासों और लेखन की प्रशंसा की और सभी के सहयोग का आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन परिषद् के महामंत्री श्री अखिलजी बंसल ने किया।

श्री टोडरमल स्मारक भवन, स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष

स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा -

# लाइफ टाइम अचीवमेन्ट अवार्ड प्रदत्त

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अवसर पर ट्रस्ट द्वारा छह ऐसी विभूतियों को लाइफटाइम अचीवमेन्ट अवार्ड प्रदानकर सम्मानित किया गया, जिनका ट्रस्ट की स्थापना में और स्थापना से लेकर आज तक ट्रस्ट के उन्नयन में तथा ट्रस्ट के माध्यम से विश्वभर में वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में मूलभूत योगदान रहा है।

दिनांक 13 अक्टूबर को श्री समयसार विधान के अवसर पर तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में आयोजित एक भव्य समारोह में लगभग 10 हजार आत्मार्थियों की उपस्थिति में सर्वश्री पूरणचंदजी गोदिका, श्री नेमीचंदजी पाटनी, पण्डित बाबूभाई मेहता, श्री महेन्द्रकुमारजी सेठी (सभी मरणोपरान्त) एवं डॉ. हुकमचंद भारिल्ल और पण्डित रतनचंद भारिल्ल को ये अवार्ड प्रदान किये गये।

श्री पूरणचंदजी गोदिका की ओर से यह अवार्ड उनके सुपुत्र श्री सुशीलकुमार गोदिका एवं सुपौत्र श्री सौरभ गोदिका ने श्री अनन्तभाई शेठ व श्री बसंतभाई दोशी के हाथों से ग्रहण किया।

श्री नेमीचंदजी पाटनी की ओर से उनके सुपुत्र श्री नगेन्द्र पाटनी, सुपुत्री इंद्रा बज एवं पुत्रवधु श्रीमती शोभा पाटनी व श्रीमती प्रेम जैन ने ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमार गोदिका एवं महामंत्री डॉ. भारिल्ल के करकमलों द्वारा ग्रहण किया।

पण्डित बाबूभाई मेहता को परोक्ष रूप से यह अवार्ड प्रदान किया गया। श्री महेन्द्रकुमारजी सेठी की ओर से यह अवार्ड उनके पौत्र श्री आनंद सेठी व भतीजे श्री अनिल सेठी ने स्वीकार किया।

पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल को श्री बसंतभाई दोशी ने साफा पहिनाकर एवं श्री अनंतभाई शेठ, श्री सुशीलकुमार गोदिका व श्री नगेन्द्र पाटनी ने प्रशस्ति-पत्र भेंटकर अभिनन्दन किया। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कमला भारिल्ल को श्रीमती इंद्रा बज व श्रीमती शोभा पाटनी ने माल्यार्पण कर, श्रीफल भेंटकर व शॉल ओढाकर सम्मानित किया।

डॉ. हुकमचंद भारिल्ल व श्रीमती गुणमाला भारिल्ल का अभिनन्दन भी उक्त सभी महानुभावों ने उपरोक्त विधिपूर्वक किया। इस दौरान सभामंडप में उपस्थित लगभग 10 हजार लोगों ने भारिल्ल बन्धुओं के सम्मान में अपने स्थान पर खड़े होकर, हवा में हाथ लहराते हुए, करतल ध्वनि से वातावरण को गुंजायमान कर दिया और उनके प्रति अपनी श्रद्धा एवं कृतज्ञता व्यक्त की।

प्रशस्ति-पत्र का वाचन क्रमश: पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित प्रदीपजी झांझरी, डॉ. संजीवजी गोधा, श्री अखिलजी बंसल एवं पण्डित संजयजी जेवर ने किया।

इस अवसर पर देशभर की संस्थाओं व संकुलों के पदाधिकारीगण व विद्वत्जन मंचासीन थे। कार्यक्रम का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

श्री टोडरमल स्मारक भवन, स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष

**स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा -**

# देशभर की 14 महत्वपूर्ण मुमुक्षु संस्थाएं सम्मानित

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में ट्रस्ट द्वारा दिनांक 13 अक्टूबर को श्री समयसार विधान के अवसर पर तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में आयोजित एक भव्य समारोह में लगभग 10 हजार आत्मार्थियों की उपस्थिति में देशभर की 14 महत्वपूर्ण मुमुक्षु संस्थाओं को ट्रस्ट द्वारा संचालित वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार की गतिविधियों में अपने महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय योगदान के लिये सम्मानित किया गया।

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई की ओर से यह सम्मान श्री अनंतभाई शेठ और उनके सहयोगियों ने टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदिका व महामंत्री डॉ. भारिल्ल के करकमलों से ग्रहण किया।

कुन्दकुन्द कहान तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट की ओर से महामंत्री श्री बसंतभाई दोशी, मंत्री श्री महीपालजी ज्ञायक एवं ट्रस्टी श्री अनंतभाई शेठ, श्री सुरेशजी पाटनी, श्री भरतभाई टिम्बडिया, श्री अशोकजी जैन व अन्य ट्रस्टियों ने ग्रहण किया।

श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, मंगलायतन की ओर से पण्डित अशोकजी लुहाड़िया एवं पण्डित संजयजी जेवर ने यह सम्मान स्वीकार किया।

श्री ज्ञायक पारमार्थिक ट्रस्ट, ध्रुवधाम-बांसवाड़ा की ओर से संस्थापक ज्ञायक परिवार के श्री महिपालजी ज्ञायक और धनपालजी ज्ञायक ने यह सम्मान ग्रहण किया।

श्री कुन्दकुन्द कहान मुमुक्षु आश्रम, कोटा के संस्थापक व संचालक श्री प्रेमचंदजी बजाज एवं उनके सुपुत्र श्री तन्मय बजाज स्वयं अपने सहयोगियों श्री रतनजी शास्त्री व श्री धर्मेन्द्रजी शास्त्री के साथ यह सम्मान ग्रहण करने के लिये उपस्थित थे।

श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत पारमार्थिक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री ललितजी लूणदा एवं पण्डित राजकुमारजी शास्त्री ने अपने ट्रस्ट की ओर से यह सम्मान स्वीकार किया।

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, नागपुर की ओर से यह सम्मान संयोजक श्री नरेशजी, निर्देशक पण्डित राकेशजी शास्त्री, प्राचार्य पण्डित विपिनजी शास्त्री एवं श्री मनीषजी शास्त्री ने ग्रहण किया।

श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन नयामंदिर ट्रस्ट, खनियांधाना की ओर से कोषाध्यक्ष श्री नरेन्द्रजी व ट्रस्टी श्री संतोषजी वैद्य ने सम्मान स्वीकार किया।

श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, सिद्धायतन - द्रोणगिरि की ओर से ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री चन्द्रभानजी व मंत्री श्री मुन्नालालजी ने यह सम्मान स्वीकार किया।

कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन की ओर से मैनेजिंग ट्रस्टी श्री प्रदीपजी झांझरी ने यह सम्मान ग्रहण किया।

पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली, चैतन्यधाम अहमदाबाद, आत्मसाधना केन्द्र आत्मार्थी ट्रस्ट दिल्ली, श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट व कुन्दकुन्द नगर सोनागिर को परोक्ष रूप से यह सम्मान प्रदान किया गया।

सम्मान के अन्तर्गत सभी संस्थाओं को श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की ओर से प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

समारोह का संचालन श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल एवं विशेष सहयोग श्री अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल व श्री विपिन जैन ने किया।

आभार प्रदर्शन श्री शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल ने किया। ●

श्री टोडरमल स्मारक भवन, स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष

# अ.भा.जैन युवा फैडरेशन का 40वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न

**सम्मेदशिखरजी :** यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अन्तर्गत दिनांक 10 अक्टूबर को अ.भा. जैन युवा फैडरेशन का 40वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन फैडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विपुलभाई मोटानी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सौरभजी जैन मेरठ थे।

महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने संगठन की नीतियों व कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला। फैडरेशन के प्रदेशाध्यक्षों क्रमश: मध्यप्रदेश के श्री विजयकुमारजी बड़जात्या, राजस्थान के श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री, महाराष्ट्र के श्री महावीरजी पाटील, पश्चिम उत्तरप्रदेश के मंत्री श्री सौरभ जैन एवं महिला प्रकोष्ठ की संयोजक श्रीमती शुद्धात्मप्रभा टडैया ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।

कार्यक्रम का संचालन श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया। ●

# पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् का सम्मेलन

**सम्मेदशिखरजी (झारखंड) :** यहाँ स्वर्ण जयंती महोत्सव शिविर के अवसर पर दिनांक 9 अक्टूबर को रात्रि में पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् का सम्मेलन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री की अध्यक्षता एवं पण्डित शिखरचंदजी विदिशा के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ।

स्नातक परिषद् के वरिष्ठ सदस्य डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित संतोषजी शास्त्री कटनी, पण्डित शिखरचंदजी शास्त्री सागर, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन, पण्डित राकेशजी लोनी दिल्ली, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित रतनचंदजी शास्त्री कोटा, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, डॉ. महेशजी शास्त्री भोपाल, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री खतौली, डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर आदि मंच पर उपस्थित रहे। परिषद् के कार्याध्यक्ष पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने परिषद् का परिचय दिया। सभी का स्वागत परिषद् के महामंत्री पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं कार्यकारिणी सदस्य पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री व पण्डित प्रवीणजी शास्त्री ने तिलक, माल्यार्पण एवं अंगवस्त्र से किया।

तमिलनाडु के स्नातक प्रतिनिधि जम्बूकुमारजी शास्त्री चेन्नई, कर्नाटक के बाहुबली शास्त्री धारवाड़ एवं महाराष्ट्र के महावीर पाटील सांगली ने अपने-अपने प्रदेशों में संचालित तात्त्विक गतिविधियों का परिचय कराया। मुख्य अतिथि पण्डित शिखरचंदजी एवं अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी के उद्बोधन व प्रेरणा का लाभ मिला।

मंगलाचरण कु.प्रतीति पाटील ने एवं संचालन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने किया। ●

श्री टोडरमल स्मारक भवन, स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष

# स्नातक एवं वर्तमान विद्यार्थियों का रहा अविस्मरणीय योगदान

अवसर था, ज्ञानतीर्थ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष के अवसर पर शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखरजी की पावनधरा पर आयोजित ''समयसार विधान एवं अध्यात्मिक शिक्षण शिविर'' का, जिसमें श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक और वर्तमान विद्यार्थी विद्वानों ने दिनरात 24 घंटे अपनी शक्ति अनुसार तन-मन-धन से अविस्मरणीय सहयोग प्रदानकर इस अद्वितीय, अनुपमेय कार्यक्रम को सफल बनाया।

आयोजन में मुख्य रूप से महाविद्यालय के ही स्नातक कार्यक्रम **संयोजक** - विपिनजी शास्त्री मुम्बई, **निर्देशक** - शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, **सहनिर्देशक** - पीयूषजी शास्त्री जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, **विधानाचार्य** - अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, संजयजी शास्त्री मंगलायतन, राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, अजितजी शास्त्री अलवर, ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, विरागजी शास्त्री जबलपुर, धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, प्रयंकजी शास्त्री रहली, विवेकजी शास्त्री दिल्ली, विवेकजी शास्त्री इन्दौर आदि एवं जतीशजी शास्त्री दिल्ली, राकेशजी शास्त्री नागपुर, प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन, महावीरजी पाटील सांगली, महावीरजी शास्त्री उदयपुर, राकेशजी शास्त्री दिल्ली, मनीषजी शास्त्री रहली, सौरभजी शास्त्री-गौरवजी शास्त्री इन्दौर, संदीपजी शास्त्री दिल्ली, अनिलजी शास्त्री भिण्ड, प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, विपिनजी शास्त्री नागपुर, जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर आदि का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

10 हजार 500 मुमुक्षु भाई-बहिनों के विशाल जन समूह के समुचित उत्तम आवास व्यवस्था में हमेशा तत्पर रहने वाले ऐसे टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक नवीनजी शास्त्री जयपुर, रूपेन्द्रजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, स्वतंत्रजी शास्त्री खरगापुर, सौरभजी शास्त्री खडैरी, करणजी शाह अहमदाबाद, गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, नीशू शास्त्री मडदेवरा, ऋषभ शास्त्री भिण्ड के अलावा वर्तमान विद्यार्थी अनुभव जैन भिण्ड, नमन जैन भिण्ड, संदीप जैन अमरमऊ, शुभम जैन गौरझामर, वैभव जैन गोरमी, स्वप्निल जैन भोपाल, प्रशांत पाटील आलते, अनिकेत जैन मौ, स्पर्श जैन मेरठ, आकाश जैन अमायन, आकाश जैन टडा, शुभम जैन मडावरा, रिमांशु जैन, कार्तिक जैन बाँदा, अभय जैन खड़ैरी, संदीप जैन खरे, नमन जैन खनियाधाना, अमन जैन दिल्ली, प्रतीक जैन मौ, शुभांशु जैन कोटा, जगदीशन जैन चैन्नई, तन्मय जैन कुरावली एवं उनके सहयोगी दीपम जैन, पीयूष जैन टडा, देवांश जैन, सचिन जैन, सोमिल जैन, अनिकेत जैन भिण्ड, जितेन्द्र जैन, प्रशांत जैन ललितपुर, सपन जैन, सहज जैन, दीपक जैन, शाश्वत जैन, आयुष जैन, सौरभ दुरुकर, सिद्धार्थ जैन, संयम शाह, चिराग जैन, अभिषेक जैन कर्नाटक, नयन जैन, लक्षित जैन, अतिशय जैन, आयुष जैन पिपरिया, अनुभव खनियाधाना, सन्मति दिवाकर, संयम देशमाने आदि ने व्यवस्था में सहयोग प्रदान किया।

**यातायात व्यवस्था** में श्री मनीष जैन वात्सल्य इन्दौर के सफल नेतृत्व में कोटा महाविद्यालय के विद्यार्थी मोहित जैन, संकल्प जैन, शुभम् जैन, सचिन जैन, भरतेश जैन ने सहयोग प्रदान किया।

**भोजनशाला व्यवस्था** में स्नातक जिनकुमारजी शास्त्री चैन्नई, सुधर्मजी शास्त्री बेलगाँव, प्रतीकजी शास्त्री मुम्बई, अभिषेक शास्त्री सिलवानी, प्रियम शास्त्री बड़ामलहरा, रोहन घाटे वर्तमान विद्यार्थी अनुभव जैन गौरझामर, प्रियांशु जैन भिण्ड, चर्चित जैन खनियाधाना, अमित जैन शाहगढ़, कीर्तिकुमार मगदूम, ऋषभ जैन दिल्ली, जिनेन्द्र जैन बमनोरा, आकाश जैन के साथ श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के उपाध्याय कनिष्ठ, उपाध्याय वरिष्ठ, शास्त्री प्रथम वर्ष एवं आचार्य धरसेन महाविद्यालय कोटा के विद्यार्थियों ने सहयोग प्रदान किया।

**विद्वान एवं विशिष्ट अतिथि व्यवस्था** में स्नातक गजेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, तपिशजी शास्त्री उदयपुर, विवेक शास्त्री पिड़ावा, वर्तमान विद्यार्थी संयम जैन नागपुर, विकेश जैन, सिद्धार्थ सिंघई, शुभम जैन भिण्ड, प्रबल जैन, विशाल जैन, अर्पित जैन, पीयूष जैन, रमन जैन, पारस जैन, प्रशांत जैन, दीपक जैन, अंकित जैन. भूपेन्द्र जैन, समकित जैन, प्रतीक जैन, समर्थ जैन, श्रेणिक लट्ठे एवं आचार्य अकलंकदेव महाविद्यालय, बांसवाड़ा के विद्यार्थियों ने सहयोग दिया।

**ऑन टॉज़ विभाग** में सर्वज्ञ भारिल्ल जयपुर, ज्ञायक जैन उदयपुर, सौरभ शाह मडदेवरा, अनेकान्त जैन रहली, सर्वदर्शी भारिल्ल आदि ने एवं विभिन्न विभागों में वर्धमान देशमाने, अक्षय शाम, ज्ञायक जैन अमरमऊ, अरिहंत जैन, विनीत जैन, शशांक जैन, विजय जैन, गौरव शास्त्री, अनिल शास्त्री ने अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर कार्यक्रम को सफल बनाया।

पाण्डाल एवं लाईट व्यवस्था में अरविन्द शास्त्री बण्डा एवं विनीत शास्त्री हटा ने सहयोग प्रदान किया।

www.ustream.tv/channel/ptst और Facebook पेज pandit Todarmal Smark Trust पर प्रसारण कर इस कार्यक्रम को विश्वव्यापी बनाने में सुदीपजी शास्त्री इन्दौर एवं प्रशांत पाटील ने अपना विशेष सहयोग प्रदान किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शृँखला में दिनांक 9.10.2016 की रात्रि में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने एक बहुत सुन्दर नाटिका ''टोडरमल से टोडरमल स्मारक तक'' का मंचन कर विशाल जैन समूह का मन मोह लिया एवं प्रस्तुत किया कि महाविद्यालय के विद्यार्थी विद्वत्ता के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी श्रेष्ठ हैं। **- शान्तिकुमार पाटील,** उपप्राचार्य श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर

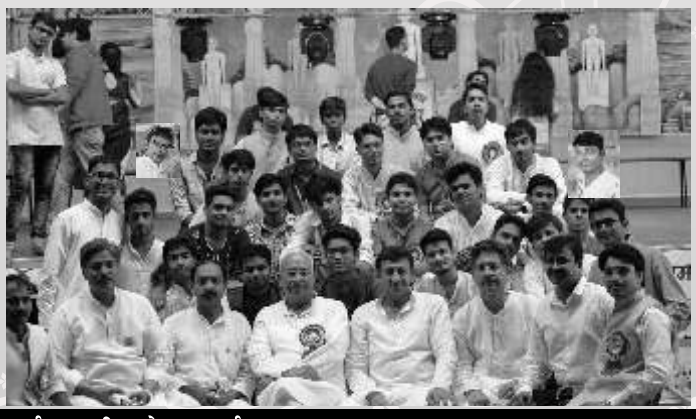

# संयोजक की कलम से...

**– विपिन जैन शास्त्री, मुम्बई**

श्री सम्मेदशिखरजी में आयोजित स्वर्ण जयंती महोत्सव के मूल में श्री समयसार विधान के साथ-साथ पूज्य गुरुदेवश्री की वाणी में श्रद्धा रखने वाले लाखों मुमुक्षुओं की एकता एवं वात्सल्य की कसौटी थी। नि:संदेह इस कसौटी पर यह महामहोत्सव पूर्णत: सफल एवं खरा उतरा। 10 हजार से अधिक संख्या में सारे देश से पधारे हुए मुमुक्षुओं ने महोत्सव को एक अतिशय भव्यता प्रदान की।

समारोह के संयोजकत्व की दृष्टि से स्मरण करने बैठता हूँ तो जब महोत्सव में भाग लेने वाले इन्द्रों की संख्या की चर्चा चली तो कोई भी यह विश्वास करने को तैयार नहीं था कि 1008 इन्द्र-इन्द्राणियों की संख्या विधान में कैसे उपस्थित हो सकती है; क्योंकि एक भव्य पंचकल्याणक में भी मात्र 16 इन्द्र व 12 राजाओं के पद को पूर्ण करने में आयोजकों को पसीना आ जाता है। तब इतनी बड़ी संख्या में इन्द्र-इन्द्राणी कैसे संभव होंगे ? पर मुझे अंतरंग में पूर्ण विश्वास था कि यह संख्या समारोह की शोभा अवश्य ही होगी और इस विश्वास का आधार था सैंकड़ों की संख्या में महाविद्यालय से शास्त्री अध्ययन कर निकले अपने स्नातक बंधु और इन्हीं स्नातक बंधुओं के सहयोग, परिश्रम एवं समर्पण का सुफल रहा इस महोत्सव की यह संख्या। जब सैंकड़ों की संख्या में स्नातकों ने ही इन्द्र हेतु अपनी स्वीकृति दी तब उनके सत्संग का नियमित लाभ लेने वाला साधर्मी मुमुक्षु समाज कैसे पीछे रह सकता है ? इस तरह यह जादुई संख्या सचमुच जादू की तरह ही अपने भवितव्य पर पहुंच गई।

प्रारम्भ में हमने 3 हजार साधर्मियों की संख्या के अनुमान से इस महोत्सव की रूपरेखा बनाई और तदनुसार ही शिखरजी में प्रवचन मण्डप आदि स्थानों का चयन किया। जब इस स्वर्ण जयंती का आमंत्रण देने हेतु मैंने अपने दौरे नगर-नगर प्रारम्भ किये तो दो-तीन सप्ताह बाद ही पता चला कि आमंत्रित साधर्मियों की रजिस्ट्रेशन संख्या तो 6500 को पार कर चुकी है, जबकि हम अभी थोड़े ही स्थानों पर आमंत्रण देने पहुंचे थे। इस महोत्सव के प्रति इतने भव्य प्रतिसाद ने हमें आश्चर्यजनक चिन्ता में डाल दिया। शिखरजी में आवास की व्यवस्थायें करना बड़ा कठिन कार्य था; अत: आमंत्रण का सिलसिला तत्क्षण की बंद कर दिया गया और विशाल साधर्मियों की संख्या के दृष्टिकोण से पुन: सभी व्यवस्थाओं की समीक्षा प्रारम्भ हो गई।

व्यवस्थाओं की परिकल्पना, निर्देशन और उनको मूर्तरूप देने की जवाबदारी संस्था के युवा, होनहार एवं ऊर्जा से भरे हुए ट्रस्टी श्री शुद्धात्मप्रकाशजी को सौंपी गई। गजब के विश्वास से भरी हुई उनकी दूरदृष्टि, पूर्व के जयपुर पंचकल्याणक में व्यवस्थाओं के अनुभव से भरी उनकी कार्यशैली ने मानो सहज में ही सारी व्यवस्थाओं के सार को प्राप्त कर लिया और उसमें उनके कंधे से कंधा मिलाकर दिन-रात एक करके पूर्ण सहयोग दिया स्मारक के मैनेजर पद पर कार्यरत पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं उनकी पूरी टीम ने। पीयूषजी की मेहनत एवं लगन ने स्वर्ण जयन्ती समारोह को अपनी अतिशय उत्कृष्टता तक पहुंचाया।

यहाँ एक बात बहुत महत्वपूर्ण है कि व्यवस्थाओं का एक बहुत बड़ा भाग कलकत्ता मुमुक्षु मण्डल के सहयोग से ही पूरा हो सका। चाहे वह भव्यतम मण्डप का निर्माण हो, छ: स्थानों में संचालित 10 हजार से अधिक साधर्मियों के भोजन की व्यवस्था हो, विद्वत् व्यवस्था हो, सुरक्षा संबंधी व्यवस्था हो, आवास उपलब्ध कराने वाली व्यवस्था हो - इन सबमें यहाँ के कर्मठ, लगनशील साधर्मीभाई श्री मुन्नाभाई (सुशीलजी चक्रेशजी सुपारीवालों) का नाम मुख्य रूप से लेना मैं आवश्यक समझता हूँ तथा उनके साथ ही कलकत्ता मण्डल के अध्यक्ष श्री सुरेशजी पाटनी जिनके द्वारा की गई कई महीनों की कठिन मेहनत ने इस महोत्सव में किसी भी व्यवस्था में कोई कमी नहीं होने दी तथा सुरेशजी के ही सहयोगी श्री भरतभाई टिम्बडिया का सहयोग भी उल्लेखनीय रहा।

शिखरजी स्थित श्री कुन्दकुन्द कहान नगर के मंत्री व ट्रस्टी भाई श्री महीपालजी ज्ञायक का सहयोग भी अविस्मरणीय रहा। श्री समयसार विधान की संपूर्ण व्यवस्थायें एवं कुन्दकुन्द कहान नगर में महोत्सव के 1 सप्ताह पूर्व से लेकर महोत्सव के 1 सप्ताह बाद तक की व्यवस्थाओं में उनका गहरा सहयोग रहा।

आ.डॉ.साहब द्वारा रचित 'श्री समयसार विधान' वास्तव में समारोह की आत्मा रहा। डॉ.साहब की लेखन प्रतिभा अद्वितीय है। अत्यंत सरल भाषा में श्रीसमयसार के गहरे गूढ रहस्यों को पद्यानुवाद के माध्यम से मानो सहजता से ही हृदयंगम करा दिया।

श्री समयसार विधान के मंगलमय आयोजन में विधान के निर्देशक पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने ग्रन्थाधिराज श्री समयसार के भावों को सामान्य जनता को हृदयंगम कराने में बहुत ही सुन्दर पुरुषार्थ किया तथा साथ ही पण्डित अभयजी शास्त्री द्वारा ग्रंथ के मार्मिक स्थलों का विशेष ध्यानाकर्षण अपनी विशिष्टता लिये रहा।

पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन ने विधान को वास्तव में एक अतिशय रूप प्रदान किया। बीच-बीच में भक्ति विशेष गाथा एवं कलशों के पद्यानुवाद कर उनका साधर्मीजनों को जागृत रखना तथा प्रतिदिन 4 घंटे तक अपने जादू से रोमांचित रखना उनकी विशेष प्रतिभा का परिचायक रहा। विधान के अन्य सहयोगी विद्वान डॉ. राकेशजी नागपुर, पण्डित ऋषभजी छिन्दवाड़ा, पण्डित अजितजी अलवर, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, ब्र.श्रेणिकजी जबलपुर एवं अन्य के सहयोग ने विधान को नई ऊँचाईयों तक पहुंचाया।

पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर का सहयोग समारोह में उल्लेखनीय रहा। चाहे विधान में उनकी जादुई आवाज से सम्मोहित करने वाला पद्यों का उच्चारण हो या सायंकालीन भक्ति हो अथवा अन्य कार्यक्रम में योगदान हो। इन सबसे एक ही निष्कर्ष निकलकर आया कि विवेक शास्त्री के रूप में संस्था को नई उदीयमान प्रतिभा का परिचय हुआ।

इस समारोह के संपूर्ण कार्यक्रम के संचालन एवं समस्त व्यवस्थाओं का दायित्व मुझे एवं श्री शुद्धात्मप्रकाशजी को सौंपा, इसके लिये मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानता हूँ तथा आदरणीय डॉ. साहब, संस्था के अध्यक्ष श्री सुशीलजी गोदिका एवं अन्य ट्रस्टियों का आभारी हूँ, जिन्होंने आत्मकल्याण की प्रेरक जिनधर्म प्रभावनारूप इस मंगलमय समारोह को संपन्न करने की जवाबदारी हमें सौंपी।

अन्त में इस समारोह में पधारे हुए सभी विद्वत्गण, आमंत्रित गणमान्य व्यक्तियों तथा संपूर्ण भारतवर्ष से पधारे हुए साधर्मी मुमुक्षु समुदाय और कार्यकर्ताओं की विशाल टीम का मैं हृदय से आभारी हूँ, जिनके सहयोग के द्वारा ही जिनधर्म प्रभावना का यह सातिशय भव्य कार्यक्रम संपन्न हो सका।●

# स्वर्ण जयंती के मायने (14)
# आज का युगपुरुष कौन ?

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

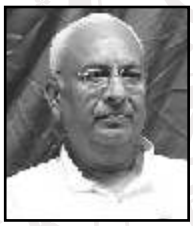

**परिवर्तन के बाद पूज्य गुरुदेवश्री का 45 वर्ष का जीवनकाल दिगम्बर जैनदर्शन के इतिहास का स्वर्णयुग था। पूज्य गुरुदेवश्री ने जैन समाज की धारा को मोड़ दिया, मात्र जनसामान्य को ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विद्वत् व संत परम्परा तक को झकझोर डाला। दर्शन शास्त्र के इतिहास में इस प्रकार की क्रांति का दूसरा उदाहरण दुर्लभ ही है।**

दिगम्बर जैन समाज के क्षितिज पर पूज्य गुरुदेवश्री के उदय से पूर्व स्वत: स्वाध्याय की परम्परा तो लुप्तप्राय: ही थी। यदि कहीं सामूहिक स्वाध्याय (प्रवचन) होता भी था तो वह या तो मात्र प्रथमानुयोग के पौराणिक ग्रंथों का या फिर करणानुयोग का; वह भी परायण मात्र, उसमें विवेचन को कोई स्थान ही नहीं था।

आत्मकल्याण व मुमुक्षुता (मुक्ति पाने का लक्ष्य) की न तो कहीं कोई चर्चा ही थी और न ही ऐसा कोई कॉन्सेप्ट विद्यमान था। कथित धर्म आराधना का उद्देश्य मात्र भोगों और स्वर्गादिक की चाह तक ही सीमित था। मात्र पुण्य ही धर्म था और पुण्यार्जन था धर्म का उद्देश्य।

**पूज्य गुरुदेवश्री को यदि युग का प्रथम आत्मार्थी कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।**

स्थानकवासी साधु होने के नाते वे समाज के सामान्य सदस्य नहीं थे वरन् एक प्रभावशाली सामाजिक हस्ती थे, तथापि **उनके चिन्तन का विषय देश और समाज नहीं मात्र 'निज भगवान आत्मा' था।** जल में रहते हुए जल से भिन्न कमलवत् वे सदैव समाज के बीच रहते हुए मात्र आत्मा की धुन में ही रहते थे, आत्मा के स्वरूप की खोज में ही लगे रहते थे। ऐसे उनके हाथ समयसार क्या आया मानो उनके जीवन में और साथ ही समाज में भी भूचाल सा आ गया। अनायास ही **एक अद्भुत क्रांति का सूत्रपात हो गया, युग की धारा ही बदल गई।**

**परिवर्तन के बाद यद्यपि वे सामान्य गृहस्थ, अव्रती श्रावक ही थे, तथापि हमें यदि किसी संत के दर्शन करने हों, सन्तवृत्ति हो देखना, जानना और समझना हो तो उनके जीवन में, उनकी अंतर्बाह्य वृत्ति में झांककर देखें; आप जान जायेंगे कि संत होते कैसे हैं।**

यदि आपको कभी जंगल में नाचते हुए मोर को देखने का अवसर न मिला हो तो प्रवचन करते हुए कानजीस्वामी को देख लीजिये, आप जान जायेंगे कि जंगल में नाचता हुआ मोर कैसा होता होगा ? ठीक उन्हीं की तरह, **सबकी ओर से बेपरवाह, सबसे निरपेक्ष, स्वयं में मस्त, मात्र स्वयं के लिये।**

उनका प्रवचन किसी और के लिये नहीं मात्र स्वांत: सुखाय हुआ करता था, स्वयं के द्वारा, स्वयं के लिये। **वे आत्मा के स्वरूप पर रीझ रहे होते थे और श्रोता उन पर; उनकी मस्ती पर।**

पूज्य गुरुदेवश्री ने जब अपने प्रवचनों के माध्यम से जिनवाणी के मर्म का उद्घाटन किया तो धार्मिक समाज झंकृत हो उठा। यदि कुछ निकट भव्य लोग उनके अनुयायी बनकर स्वाध्यायी हो गये तो अन्य बहुतायत लोगों को उनके मुख से सिद्धांतों और आत्मा के स्वरूप की अभूतपूर्व व्याख्या सुनकर धर्म पर ही संकट दिखाई देने लगा, वे उद्वेलित हो उठे, बौखलाने लगे, तीखी और कठोर प्रतिक्रियाएं व्यक्त करने लगे, जैन समाचार पत्र उन्हीं के उल्लेख से भरे रहने लगे और फलस्वरूप **शताब्दी के आगामी दशक मात्र उन्हीं के नाम समर्पित हो गये। समर्थन हो या विरोध; पर चर्चा का केन्द्र बिन्दु मात्र वे ही बने रहे। वे युगपुरुष हो गये।**

वस्तुस्वरूप का उद्घाटन तो हो गया, तीर्थंकरों, गणधरों और आचार्य भगवंतों द्वारा जो यह अमूल्य विरासत जो हमें पूज्य गुरुदेवश्री के माध्यम से बिना मूल्य ही मिल गई, वह मात्र कुछ सीमित लोगों तक ही सीमित न रह जाये, वह **किस प्रकार जन-जन की वस्तु बने, किस प्रकार विश्व के कोने-कोने में, प्रत्येक घर में पहुंचे,** किस प्रकार आबाल-गोपाल अपने आत्मा का स्वरूप पहिचानकर अपने कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें **यह यक्षप्रश्न, यह चुनौती सम्पूर्ण जिनशासन के समक्ष उपस्थित थी।** यह एक ऐसा भागीरथ कार्य था, जिसके लिये भागीरथी प्रयत्नों की आवश्यकता थी। **आवश्यकता थी प्रचुर संसाधनों की, एक सकारात्मक दृष्टिकोण की, दूरदृष्टि की, प्रभावशाली योजना की, सिद्धांतवादी सहिष्णुता की, समर्पित कर्मठता की, एक निस्पृह व्यक्तित्व की, सशक्त सम्प्रेषण शक्ति के धनी, तार्किक, रोचक और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक व्यक्तित्व की।**

यद्यपि यह कोई सामान्य बात नहीं थी, ऐसे लोग विरले होते हैं, कई-कई शताब्दियों में कोई एक व्यक्ति ऐसा पकता है; पर वसुन्धरा अभी निपूती नहीं हो गयी थी, युग की मांग पूरी हुई, एक नवप्रभात का आविर्भाव हुआ। **टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्थापना हुई और वहाँ पण्डित हुकमचंद शास्त्री का पदार्पण हुआ और इन दोनों को ही पूज्य गुरुदेवश्री का भरपूर आशीर्वाद और समर्थन मिला। बड़ौदा पंचकल्याणक में हजारों लोगों की उपस्थिति में गुरुदेवश्री ने डॉ. भारिल्ल को श्रीफल भेंटकर मानो अपनी भावना ही व्यक्त कर दी। अपनी सम्पूर्ण विरासत ही उन्हें सौंप दी।**

आज अनायास ही उस समय की गृहदशा का गहन अध्ययन करने को मन मचल उठता है, जिस समय में इन युगांतरकारी संयोगों की संरचना हो रही थी।

डॉ. भारिल्ल ने महसूस किया कि **यदि इस प्राप्त तत्त्वज्ञान को कार्यकारी और प्रभावशाली बनाना है तो आवश्यकता है कि बाल्यावस्था से ही धार्मिक संस्कारों का सिंचन किया जाये।**

ऐसा करने के लिये आवश्यक था कि **आधुनिक भाषा और सुबोध शैली में क्रमानुसार, निर्विवाद एवं व्यवस्थित पाठ्यक्रम की रचना की जाये।** देशभर में उक्त पाठ्यक्रम के पठन-पाठन की समुचित व्यवस्था इसप्रकार की जाये कि **समाज के जनसामान्य को यह सदा-सर्वदा, सहज-सुलभ रहे।** हर जगह पाठशालाओं में शिक्षण कार्य करने के लिये योग्य व प्रशिक्षित अध्यापक उपलब्ध हों। इसके लिये आवश्यक था कि **समाज के सदस्यों को ही प्रशिक्षित किया जावे।**

जिनमंदिरों और स्वाध्याय भवनों में सामूहिक स्वाध्याय और प्रवचनों की व्यवस्था हो और उनके लिये प्रवचनकार विद्वान उपलब्ध रहें। इसके लिये **विद्वान तैयार करने के लिये ऐसे मेधावी बालकों की आवश्यकता थी जो कि वर्षों तक व्यवस्थित अध्ययन करके जिनवाणी एवं जैन अध्यात्म के विशेषज्ञ बनें** और फिर निस्पृह और सात्विक वृत्ति से समाज को इस अध्यात्म अमृत का पान करवा सकें।

उक्त सभी कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न हो सकें और स्वाध्याय की परम्परा फलेफूले इसके लिए बड़ी संख्या में **उचित मूल्य पर जिनवाणी के प्रकाशन और वितरणतंत्र की आवश्यकता थी।**

एक बड़ी चुनौती और थी, कतिपय विद्वानों को छोड़कर अन्य साधर्मियों के लिए यह संभव नहीं था कि वे प्राकृत और संस्कृत भाषा में रचित आचार्यों के मूल ग्रन्थों को पढ़ और समझ सकें, उनके लिए आवश्यक था कि **वर्तमान भाषा और सरल-सुबोध शैली में जैनदर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों की तार्किक व्याख्या करते हुए प्रमाणिक नवीन सत्साहित्य का निर्माण किया जाए और उसे घर-घर तक ही नहीं जन-जन तक पहुँचाया जाए।**

ऐसे लोग जो पढ़ने में कठिनाई का अनुभव करते हैं, वे लोग विशिष्ट विद्वानों के प्रवचन अपने घर पर, अपनी सुविधानुसार किसी भी समय पर सुनकर जिनवानी के मर्म को समझ सकें और उनके लिए **प्रवचनों की ऑडियो व वीडियो सीडी व डीवीडी का निर्माण करवाकर वितरण की व्यवस्था करना आवश्यक थी।**

**टेलीविजन व इंटरनेट के माध्यम से मात्र जैन समाज ही नहीं व मात्र भारतवर्ष ही नहीं वरन सम्पूर्ण विश्व के जैन-जैनेतर समाज तक जैनदर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों की प्रमाणिक जानकारी पहुँचाना भी आज के युग की आवश्यकता है।**

यद्यपि स्वाध्याय आदि की गतिविधियाँ अपने घर पर रहकर एकांत में भी संभव है तथापि चंचलवृत्ति के धारी हम कमजोर लोगों को धर्मसाधना में स्थित बने रहने के लिए अपने परिवार और समाज में **विशाल पैमाने पर धार्मिक आयोजनों का क्रम जारी रहना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।** ऐसे आयोजन व्ययसाध्य, श्रमसाध्य व समयसाध्य हुआ करते हैं और उनकी सफलता के लिए आवश्यक है कि कोई **ऐसा चुम्बकीय आकर्षण का धारक व्यक्तित्व इनके पीछे हो जो जनमसूह को आकर्षित ही नहीं प्रभावित भी कर सकें।**

पर यह सब हो कैसे? कौन करता यह सब?

**हमें इन सब कार्यों की लिस्ट पढ़ने मात्र में भी अकुलाहट होने लगती है और हम इसे बीच में ही छोड़कर आगे बढ़ जाना चाहते हैं तो जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में यह सब करने का बीड़ा उठाया होगा उसका क्या हुआ होगा? जिसने अपने सारे जीवनभर यही किया है उसका क्या हुआ होगा? जरा कल्पना तो कीजिये?**

क्या ऐसा कोई व्यक्ति आपकी निगाह में है जो यह सब कर सकता हो, जिसने यह सब सफलतापूर्वक कर दिखाया हो, जो आज भी यह सब कर रहा हो ?

उस व्यक्ति का नाम है **डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल।**

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल आज एक व्यक्ति मात्र नहीं, एक व्यक्तित्व का नाम है डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल; वह एक संस्था है, एक अभियान हैं। कोई व्यक्ति अकेले ही सबकुछ तो नहीं कर सकता है, उसके साथ उसकी बड़ी टीम भी होती है जो उसे उसके स्वप्नों को साकार करने के लिए सहयोग प्रदान करती है। डॉ. भारिल्ल भी अकेले नहीं थे, वे इस मायने में सौभाग्यशाली रहे कि उन्हें ऐसे लोगों का भरपूर साथ और सहयोग मिला।

**डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के मायने हैं - ''महान स्वप्न दृष्टा, सफल योजनाकार, विवेकी संगठक, कर्मठ व्यक्तित्व, सफलतम आयोजक, कुशल प्रशासक, विचक्षण नीतिज्ञ, सूक्ष्म तार्किक, बेहद मनोवैज्ञानिक, व्यावहारिक जीवन में अत्यन्त उदार और सैद्धान्तिक मामलों में अत्यन्त अनुदार, जगत के प्रसंगों में अत्यन्त निर्भय और जिनवाणी के विश्लेषण में भीरुता की हद तक सजग, उच्च नैतिक मापदण्ड वाले, निस्पृही व्यक्तित्व, निबंधकार, कहानीकार, उपन्यासकार, पत्रकार, सम्पादक, टीकाकार, अनुवादक, लोकप्रिय कुशल वक्ता, प्रकाशक, वितरक, स्वभाव से ही शिक्षक एवं जमीन से जुड़े रहकर गगन में विचरण करने वाला एक महामानव।''**

**वे एक अत्यन्त निष्ठावान शिष्य भी हैं, उन्होंने पूज्य गुरुदेवश्री को अपना गुरु बनाया और जीवनभर उनके प्रति कृतज्ञ और निष्ठावान बने रहे, उन्हीं से प्राप्त तत्त्व के प्रचार के लिए अपने जीवनभर समर्पित रहे।**

मासिक पत्र **''आत्मधर्म''** के सम्पादक के रूप में शिष्य होने के नाते अपना कर्तव्य निभाने के लिए, अपने पत्रकार धर्म का पालन करते हुए, **पूज्य गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी और उनके वक्तव्यों के प्रति समाज में व्याप्त भ्रांतियों के निवारण हेतु** उनके द्वारा लिए गए पूज्य गुरुदेवश्री के इन्टरव्युओं ने समाज के वातावरण में व्याप्त तत्कालीन कलुषता को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल का नाम आज समाज में **सफलता का पर्याय बन चुका है।**

मिशन या समाज में कोई भी कार्य हो, उसमें यदि **डॉ. भारिल्ल साथ हैं तो सफलता की गारंटी है।** इसी बात को इस तरह उल्टा भी जा सकता है कि यदि किसी कार्य, योजना या रीति-नीति में **यदि डॉ. भारिल्ल की असहमति है (सक्रिय विरोध नहीं) तो उस कार्य की असफलता सुनिश्चित है।**

एक नहीं अनेकों अवसरों पर ऐसा हो चुका है, समाज का बच्चा-बच्चा ऐसी घटनाओं का साक्षी है, मैं यहाँ कोई उदाहरण देना आवश्यक नहीं समझता हूँ।

यह बात भी किसी चमत्कार से कम नहीं है कि **एक समय उनके कटु आलोचक रहे लोग कुछ ही समय में स्वतः ही उनके प्रबल समर्थक बन जाते हैं।** ऐसे एक नहीं अनेकों उदाहरण मौजूद हैं।

**उनकी क्षमता और प्रतिभा और प्रभाव का लोहा उनके कटु आलोचक भी मानते हैं।** तथ्य तो यह है कि उनके आलोचकों के पास उनकी आलोचना करने के लिए कोई कारण या तथ्य है ही नहीं, शिवाय ईर्ष्या और तद्जनित द्वेष के अब यह तो सामान्य मानव मनोवृत्ति है, इसमें भला कोई कर ही क्या सकता है।

जैनदर्शन के किसी गूढ़-गंभीर या विवादास्पद विषय पर कहीं भी यदि किसी आधिकारिक राय की अपेक्षा हो तो एक ही नाम याद आता है - ''डॉ. भारिल्ल''।

**हजारों पृष्ठों में रचित उनके साहित्य में और हजारों घंटों के व्याख्यानों में, जनसामान्य से लेकर उच्चकोटि के विद्वानों तक कोई भी व्यक्ति आजतक कोई भूल नहीं निकाल सका है,** हालांकि सूक्ष्मदर्शी लेकर छिद्रान्वेषण करने वाले ऐसे लोगों की तादाद कम नहीं है।

**व्याख्याता यदि डॉ. भारिल्ल हों तो कोई भी विषय किलिष्ट या कठिन नहीं माना जाता है। कठिन से कठिन विषय को सर्वसामान्य के गले उतार देना उनके लिए बाएँ हाथ का खेल है। कल और वाणी के तो वे जादूगर ही हैं।**

किसी ग्रन्थ का स्वाध्याय या किसी विषय का चिन्तन आपने यदि 100 बार किया हो 100 लोगों के मुख से उसकी व्याख्या सुनी हो तो एक बार डॉ. भारिल्ल के मुख से भी सुन लीजियेगा! **आप पायेंगे कि ''यह तो आपने कभी पढ़ा-सुना ही नहीं, यह तो हमने कभी सोचा ही नहीं, पर सही तो यही है।''**

आज आप सुदूर विश्व के किसी भी कोने में चले जाइए, बात यदि आत्मा की चल रही है तो मात्र एक ही नाम याद आता है डॉ. भारिल्ल। **मानों ''आत्मा'' उनका पेटेन्ट हो, रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क हो। ''वीतराग विज्ञान'' शब्द के बारे में भी सही सत्य है।** **(शेष पृष्ठ 19 पर...)**

# समयसार विधान का अद्भुत दृश्य

# कैमरे की नजर में ...

नाट्य प्रस्तुतियों के विभिन्न दृश्य
भक्ति संध्या का आकर्षक दृश्य

(पृष्ठ 14 का शेष...)

**जैनदर्शन का ऐसा कौनसा मूलभूत सिद्धान्त है जिस पर उनकी कलम न चली हो?**

**साहित्य चाहे कोमलमति बालकों के लिए या प्रबुद्धों के लिए सामान्यजनों के लिए हो या प्रबुद्ध विद्वान और मनीषियों के लिए, सरलतम प्राथमिक कक्षा के विषयों पर हो या दर्शन के गूढ़-गंभीर सिद्धान्तों पर, द्रव्यानुयोग हो या प्रथमानुयोग, गद्य हो या पद्य, मौलिक साहित्य हो या अनुवाद तथा टीकाएँ उनकी कलम हर ओर चली है।** ऐसे कौनसे विषय हैं जिन पर उन्होंने व्याख्यान ना किये हों।

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी के ऊपर **शोधग्रन्थ ''पं. टोडरमल व्यक्तित्व एवं कृतित्व''** की रचना कर यदि उन्होंने स्वयं इन्दौर विश्वविद्यालय से डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की तो **अपने जीवनकाल में ही अपने ऊपर तीन-तीन पीएचडी किये जाने और अनेकों लघु शोध ग्रन्थों के प्रकाशित होने का गौरव प्राप्त किया है।** जो कि हिन्दी साहित्य और साहित्यकारों के इतिहास में **एक अभूतपूर्व कीर्तिमान है।**

स्वयं उन्होंने अनेकों शोध छात्रों का मार्गदर्शन भी किया है। आज उनके अनेकों शिष्य भी शोधग्रन्थों की रचना कर पीएचडी की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं और अनेकों विश्वविद्यालयों में लेक्चरर, प्रोफेसर, हैड ऑफ डिपार्टमेन्ट आदि पदों को सुशोभित कर रहे हैं।

बात चाहे **''सर्वज्ञता और क्रमबद्धपर्याय''** जैसे मूलभूत विषयों की हो या **''अनेकान्त व स्याद्वाद''** जैसे सदा गलत समझे जाने वाले विषयों की जिनागम के ताले की चाबी के समान, अत्यन्त अपरिचित विषय **''नयचक्र''** की चर्चा हो या जनसामान्य के बीच अत्यन्त लोकप्रिय विषय **''धर्म के दशलक्षण व बारह भावना''** की व्याख्या की, बात सर्वाधिक चर्चित विषय **''निमित्त-उपादान''** की हो या **''निश्चय-व्यवहार''** की; उनकी कलम हर विषय पर अधिकारपूर्वक बेवाक चली है, उनकी व्याख्या को आज तक किसी भी प्लेटफार्म पर चुनौती नहीं दी जा सकी है।

जैन अध्यात्म व आत्मकल्याण के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण विषय **''दृष्टि का विषय''** पर उनकी व्याख्या बिना कहे ही उनके विषय में सबकुछ कह देती है।

**''दृष्टि के विषय में पर्याय शामिल है या नहीं'' और ''आत्मा के स्वपर प्रकाशक स्वभाव'' के विषय में उनके अभिप्राय ने इस विषय को विशिष्ट स्पष्टता प्रदान की है।**

**प्रथमानुयोग के सर्वाधिक लोकप्रिय पात्रों और सर्वाधिक चर्चित प्रसंगों पर मर्यादाओं का पालन करते हुए उनकी सतर्क व बेबाक व्याख्या बेजोड़ है, ऐसा विश्लेषण अन्यत्र दुर्लभ ही है।**

**उनकी विशेषता है कि उन्होंने महान ऐतिहासिक चरित्रों का चरित्रहनन किये बिना, उनका प्रभामंडल अक्षुण्ण रखते हुए उनके व्यक्तित्वों के ऐसे पहलुओं को उजागर किया है जो स्वाभाविक व यथार्थ के निकट प्रतीत होते हैं पर जिनपर आजतक किसी की निगाह गई ही नहीं थी।**

खंडकाव्य **''पश्चाताप'' के रामचन्द्रजी** हों या **रक्षाबंधन के ''श्रुतसागर''** क्या इनसे पहिले कभी किसी ने उनके विषय में इस दृष्टिकोण से विचार किया था? उनके विश्लेषणों ने जनमानस पर अंकित उक्त पात्रों की छवि ही बदल डाली है। **''भरत और बाहुबली'' के बीच हुए युद्ध** का प्रसंग हो या चर्चा **''नेमिनाथ के वैराग्य की''** (महाकाव्य वैराग्य) क्या कभी किसी ने उन प्रसंगों को इस दृष्टि से देखा था? पर क्या यही उचित और यथार्थ प्रतीत नहीं होता है?

उनकी कलम **''तीर्थंकर महावीर'' (''तीर्थंकर भगवान् महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ'' तथा ''वीतरागी व्यक्तित्व महावीर'')** पर चली हो या **चक्रवर्ती भरत (अभागा भरत एवं उच्छिष्ट भोजी)** पर, वह अपनी विशिष्ट व्याख्याएँ प्रदान कर गयी।

जीवन की रीतिनीति **(आप कुछ भी कहो)** व समाज की परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए सार्वजनिक जीवन में कार्य करने की रीतिनीति की व्याख्या करने वाली **''सत्य की खोज''** और **''रीतिनीति''** जैसी रचनायें **आज हिन्दी साहित्य व नीति शास्त्र की अमर कृतियाँ हैं।**

**स्वयं अपने जीवन और कार्यक्षेत्र में उन्होंने अपनी इस नीति का कठोरता से पालन किया है कि - ''न तो मुझे धर्म या सिद्धान्तों के नाम पर समाज का विघटन ही स्वीकार है और न ही संगठन के नाम पर सिद्धान्तों का बलिदान।''**

सिद्धान्तों में गम्भीर मतभेदों के बावजूद अपने घोर विरोधियों के साथ व्यक्तिगत जीवन में उनके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर व गरिमामय रहे हैं। **द्वेष उनकी तासीर ही नहीं है। वे अपने कटुतम आलोचकों के प्रति भी न तो द्वेष ही रखते हैं और न ही संवादहीनता ही। यही कारण है कि अनेकों अवसरों पर समाज ने शेर और गाय को एक ही घाट पर पानी पीते हुए देखा है।**

**जो लोग उनके व्यक्तित्व के इस पहलू को नहीं पहिचानते हैं वे कभी-कभी भ्रमित भी हो जाते हैं या कुछ लोग सब कुछ जानते-समझते हुए भी इस तरह की घटनाओं का लाभ अन्यों को भ्रमित करने के लिए करते हुए देखे जाते हैं। हालाकि ऐसे प्रयास सदा ही अपनी ही मौत मर गए, काल के गाल में समा गए, डॉ. भारिल्ल ने ऐसे व्यक्तियों और उनके ऐसे प्रयासों को कभी भी महत्व नहीं दिया। उनके बारे में सोचकर अपना एक मिनिट भी बबार्द नहीं किया। यही उनके विरोधियों की सबसे बड़ी समस्या भी है।**

जैन आचरण के मूल **''अहिंसा''** का विषय हो या स्वयं की खोज की विधि को चित्रण करने वाला **''करोड़पति रिक्शावाला''** का व्याख्यान हो, इन दोनों और इन जैसे अनेकों व्याख्यानों ने जैन ही नहीं जैनेतर समाज के लाखों लोगों को झोकझोर डाला है।

हिंसा और अहिंसा की ऐसी व्याख्या सुनकर लोग अभीभूत हो उठते हैं। उनके द्वारा रचित पूजनें **''देव शास्त्र गुरु पूजन'', ''सीमंधर पूजन'' और ''महावीर पूजन''** तो आज जैन समाज के बच्चे-बच्चे की जबान पर है ही और अब उनके द्वारा रचित अध्यतन **''श्री समयसार विधान''** तो अपने प्रथम आयोजन में ही इतिहास रच गया है।

उनके द्वारा रचित आत्मगीत **''मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ''** तो आज आत्मार्थी समाज में राष्ट्रगीत के समान लोकप्रिय है ही, उनके द्वारा रचित **''परमागमों के पद्यानुवादों''** के रिकार्ड आज आत्मार्थी समाज के घरों को दिनरात गुंजायमान किये रहते हैं।

उन्होंने समयसार और **प्रवचनसार जैसे परमागमों पर तथा तत्त्वार्थसूत्र जैसे महान ग्रन्थ और गूढ़गंभीर टीकाएँ भी लिखी हैं और समयसार, प्रवचनसार और नियमसार पर अब तक उपलब्ध सभी व्याख्याओं को समाहित करते हुए विस्तृत अनुशीलन भी किया है। सभी अनुशीलनों में पूज्य गुरुदेवश्री की व्याख्या को विशिष्ट स्थान दिया गया है, आखिर वे ही तो हैं जिन्होंने उन्हें और हम सभी को इन बातों को समझने की दृष्टि प्रदान की है।**

**उनकी अद्यतन कृति ''सल्लेखना और समाधिमरण'' मात्र मरण ही नहीं वरन जीवन सुधारने वाली ऐसी महान कृति है जो युगों-युगों तक साधर्मियों जीवन की कला और मरण का विज्ञान सिखाती रहेगी।**

विश्वभर में आयोजित अन्य संगठनों के आयोजनों को तो उन्होंने अपनी

उपस्थिति से गरिमा व ऊँचाइयाँ प्रदान की ही हैं पर स्वयं अपनी ही संस्था में **अपने ही नेतृत्व में 2012 में जयपुर पंचकल्याणक और अभी 2016 में तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में स्वर्णजयन्ती वर्ष समारोह तथा श्री समयसारविधान के अभूतपूर्व, गरिमामय आयोजनों ने उनकी अद्वितीय आयोजन क्षमता व अप्रतिम लोकप्रियता के झंडे गाड़ दिये हैं।**

अभी मात्र छह वर्ष पूर्व देशभर में पूरे वर्षभर अत्यन्त उल्लासपूर्वक मनाया गया **उनका हीरकजयन्ती वर्ष** भी जनमानस के बीच उनकी गहरी लोकप्रियता को दर्शानेवाली अनकही गाथा है।

गत 50 वर्षों से देश के विभिन्न भागों में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले विशाल 18-20 दिवसीय, **विलक्षण ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविरों** की शृँखला को यदि आश्चर्यों की श्रेणी में रखा जाय तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। ऐसे विशाल आयोजन और वह भी लगातार पचास वर्षों तक, बिना रुके? हैं ना आश्चर्य का विषय?

**निरंतरता उनकी विशेषता है, उन्होंने जो भी कार्य और योजनायें प्रारम्भ कीं उनमें सदा निरंतरता बनाए रखी,** कभी व्यवधान नहीं आने दिया। न तो स्वयं ही रुके और न ही उन्हें ठहरने दिया।

उनकी इस सभी उपलब्धियों के पीछे का एक मात्र राज यही है कि **उन्होंने कभी भी अपने उपयोग को भटकने नहीं दिया। जीवन का एक पल भी दुनियादारी की बातों में या चिन्तन में बर्बाद किये बिना मात्र अपनी साधना में ही लगे रहे।**

उनकी इस साधना में **उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गुणमाला भारिल्ल का उन्हें सदैव सम्पूर्ण समर्थन और सहकार मिला।** जीवन के अन्य पहलू को तो उन्होंने सम्पूर्णतः सम्भाला ही, उनकी इन गतिविधियों में भी सदा सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

एक और आश्चर्यजनक संयोग है कि **उनका सम्पूर्ण परिवार और आगामी पीढ़ियाँ हर मायने में उनकी सच्ची अनुगामी हैं।** सभी लोग स्वाध्यायी हैं। प्रवचन करते हैं। कक्षाएँ लेते हैं। लेखन आदि कार्य करते हैं। वे हर प्रकार से समर्पित भाव से इन सभी तत्त्वप्रचार के कार्यों में संलग्न हैं।

**जिसने समाज के आबाल-वृद्ध सभी को इस मार्ग पर लगाया हो, जिसने जिनवाणी की व्याख्या प्रदान की, जिनवाणी को घर-घर पहुँचाया, जन-जन के हृदय और कंठ में जिनवाणी को बसाया, जिनवाणी के निष्णात हजारों विद्वान तैयार कर उन्हें नगर-नगर में स्थापित कर दिया और विद्वानों के निर्माण की कार्यशाला स्थापित कर इस प्रक्रिया को अमर कर दिया है, आज मात्र जनसामान्य ही नहीं, अपनी आम्नाय और पंथों के भेद से ऊपर उठकर सम्पूर्ण जैनसमाज के मूर्धन्य विद्वद्जन और साधुसंत भी जिसके प्रति अपना आदर, सद्भावना और विश्वास व्यक्त करते हों, यदि वह नहीं तो कौन होगा ''आज का युगपुरुष''।**

**देश और विदेशों के सभी जैनबन्धु, चाहे उनका सम्बन्ध किसी भी साम्प्रदाय विशेष से क्यों न हो, उनके अनुयायी हैं, उनके प्रवचन सुनते हैं व साहित्य पढ़ते हैं।**

**उन्होंने स्वयं ही अपना मार्ग बनाया, वाहन का निर्माण किया और फिर स्वयं ही सारथी बनकर मार्ग की समस्त बाधाओं का सफलतापूर्वक सामना व निवारण करते हुए इस तत्त्वप्रचार के रथ को उस पर निर्बाध दौड़ाया। वे कभी ठिठके नहीं। वे कभी अटके नहीं। कभी भटके नहीं। वे आज भी दौड़ते ही जा रहे हैं। निःशंक, निर्बाध, अनन्त की ओर पूज्य गुरुदेवश्री के महाप्रयाण के बाद, हाँ-हाँ, वे ही हैं इस युग के जीवन्त ''युगपुरुष'' डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल!** ●

# इतिहास टूट गया...

**- शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर**

मैं यह कह नहीं सकता कि ये देवयोग से हो गया, ऐसा भी नहीं कह सकता कि किसी के करने से हो गया, हुआ तो सब अपनी ही योग्यता से, किसके करने से क्या होता है ?

ऐसा कैसे हो सकता है कि पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्वर्ण जयन्ती हो और रिकॉर्ड न टूटे, इतिहास न बने, उन 6 दिनों में हर पल की फायर फाइटिंग की कल्पना भी रोमांचित कर देती है।

झंडारोहण के बाद अति उत्साह से लबालब जब हजारों मुमुक्षु भाई-बहिन एक साथ उस विशाल, खूबसूरत, श्वेत पाण्डाल में प्रवेश कर रहे थे, प्रवेश नहीं कर रहे थे; बल्कि तेजी से भागते हुए अपनी जगह ले लेना चाहते थे, तो मंच से देखने पर लग रहा था मानो पूरा देश सिमट के शिखरजी के इस विशाल पाण्डाल में उमड़ पड़ा हो और एक पल भी इस तत्त्वज्ञान की धारा से वंचित नहीं रहना चाहता हो, इस अद्भुत दृश्य को मैं मंच से देखकर इतना भावुक हो गया, आँखें भर आयीं, जो मिला उसके गले लग गया, भींच लिया उसे और उसी पल मुझे लग गया बस आयोजन तो सफल हो चुका जबकि ये तो प्रथम दिन का प्रथम घंटा था।

हालांकि तैयारियों में कोई कमी नहीं रखी थी, प्रोफेशनल मैनेजमेन्ट में कोई कसर नहीं छोड़ी थी, हमारी टीम के समर्पण में कोई कमी नहीं थी, जो पिछले 9 महिने से इस काम में लगी थी, पर इतने Smooth आयोजन के पीछे सिर्फ एक कारण था जिसे नाकारा नहीं जा सकता वो है - आप आपका सहयोग, आप की भावना, आपका व्यवस्थाओं को अनुशासित तरीके से पालन करना और आपकी वो सकारात्मक सोच, जो पूरे आयोजन के दौरान प्रवाहित हो रही थी।

मेरे 2 सूत्रों ने मानो जान फूँक दी हो और ''पहले आप'' और ''सिर्फ एक दिन में एक कार्यकर्ता को प्रोत्साहन'' मैंने देखा हर व्यक्ति यह कहता हुआ पाया गया और पूरा माहौल ही बदल गया।

हजार इन्द्र-इन्द्राणियों के साथ हर एक साधर्मी मानो शिखरजी की उस पावन धरा पर अपने आप को समयसार में रंग देना चाहता था, समयसार में खो जाना चाहता था, समयसार बन जाना चाहता था, हर एक साधर्मी बस देखते ही बनता था। आप कह सकते हैं कि मैं अतिशयोक्ति कर रहा हूँ तो पूछ लो उनसे जो प्रत्यक्षदर्शी थे।

स्वर्ण जयंती आयोजन समिति, हमारे स्नातक विद्वान, पूरा कलकत्ता मुमुक्षु मण्डल, कुन्दकुन्द कहान तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट के ट्रस्टियों, वर्तमान छात्रों ने तो मानो इस आयोजन को अपने माथे पर ही उठा लिया था, लगभग 500 लोगों की एक सुर में काम करने वाली इस टीम ने अपना पूरा समर्पण दिया, जिन्हें न अपने खाने का होश था न सोने का बस एक धुन थी कि जो साधर्मी पधारे हैं उन्हें कोई तत्त्व लाभ लेने में कोई परेशानी न हो।

ऐसे हजारों लोग इस कार्यक्रम के भागी बने जो पहली बार इस मुमुक्षुओं के मेले में आये, इस नयी खेप को जिनवाणी के सच्चे स्वरूप का परिचय हुआ, इन तक सच्चा मार्ग पहुँचा, ये हमारी सबसे बड़ी सफलता हुई - हमने इस दिशा में एक कदम और बढाया।

जाने अनजाने में अगर किसी को कोई भी आपत्ति/परेशानी या हमारे किसी साथी के कटु व्यवहार के कारण हुई हो तो मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

हम रहें या न रहें; पर टोडरमल स्मारक ट्रस्ट मनाएगा अपने 100 वर्ष, हम जुट पड़े हैं इस तैयारी में।

अगले 100 वर्ष मनाने के लिये चलिये एक प्रण लें - एक वर्ष में किसी एक व्यक्ति को जिनवाणी के सच्चे स्वरूप की ओर आकर्षित करे और उसे इस अद्भुत मार्ग में लाने का प्रण लें।

एक साल में सिर्फ एक व्यक्ति को, बस ! ●

AmImXIr...

## मेरा विचार...

मेरा स्वास्थ्य ठीक न होने पर भी मुझे शिखरजी जाने का बहुत उत्साह था। वहाँ जाकर मेरा स्वास्थ्य भी ठीक रहा। मैंने सभी कार्यक्रमों में उपस्थित रहकर लाभ लिया और वहाँ की अभूतपूर्व व्यवस्था को भी देखा जो कि सराहनीय है। वहाँ की अपार जनसंख्या को देखकर मैं बहुत ही प्रसन्न होता था और यह विचार आता था कि गुरुदेवश्री के द्वारा जो तत्त्वज्ञान बताया गया है, वह तत्त्व अब जनता के दिमाग में भलीभांति समा गया है। तभी तो यहाँ पर इतनी अपार जनता इकट्ठी हुई है। वहाँ के सभी प्रोग्राम आगमानुसार हुये। अधिकांश सभी भूतपूर्व विद्यार्थी भी आये और उनके भी सभी प्रोग्राम अच्छे रहे। **– पण्डित रतनचंद भारिल्ल (प्राचार्य– श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय)**

## आत्मार्थियों का महासम्मेलन...

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की प्रेरणा से निर्मित पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के सुवर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखरजी में समयसार मण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर वास्तव में पूरे भारत वर्ष से पधारे हुए आत्मार्थियों का महासम्मेलन था।

देश के लगभग सभी प्रांतों से 10 हजार से अधिक साधर्मी भाई-बहिन इस अवसर पर शिखरजी पधारे थे। साधनों की कमी जहाँ बार-बार सताती है, ऐसे शिखरजी क्षेत्र पर असंख्य समर्पित कार्यकर्ताओं ने आवास, यातायात, भोजन आदि का व्यवस्थापन अत्यंत अनुशासित पद्धति से किया। जिसके लिये वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

मंच संचालन और व्यवस्था भी बहुत ही सराहनीय थी। स्वाध्याय, पूजन, विधान, प्रवचन, विविध संस्थाओं के सम्मेलन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, सूचनाएँ सब कुछ निर्बाध रूप से किसी भी साधर्मी को बोरियत महसूस हुए बिना अत्यंत हर्ष एवं उल्लासपूर्वक सम्पन्न हुए।

देश के लगभग सभी छोटी-बड़ी मुमुक्षु संस्थाओं के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता इस महासम्मेलन में पधारे थे। दिगम्बर जैन धर्मावलम्बी मुमुक्षु समाज की अद्भुत एकता का विराट स्वरूप यहाँ पर अनुभव करने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ।

इस सुन्दर, अनुशासित व भव्य आयोजन के लिये वैसे तो सभी लोग प्रशंसा के पात्र हैं, लेकिन कोलकाता मुमुक्षु मण्डल के श्री सुरेशजी पाटनी, श्री भरतभाई, श्री मुन्नाभाई और अन्य कई साथियों का परिश्रम अत्यंत सराहनीय था।

लगभग 1 वर्ष तक इसका आयोजन एवं नेतृत्व करने वाले श्र विपिनजी, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी, श्री परमात्मप्रकाशजी, श्री अध्यात्मप्रकाशजी, डॉ. संजीवजी गोधा, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील एवं श्री पीयूषजी का योगदान तो शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सकता।

इस महासम्मेलन की समृतियाँ सभी साधर्मी भाई-बहिनों के दिलों में वर्षों तक तरोताजा रहेगी, इसमें कोई संदेह नहीं। **– अजित जैन, बड़ौदा**

## शुद्धात्मा की बात सुनने पहुंचे टोले के टोले...

टोडरमल स्मारक की 50वीं वर्षगांठ का अत्यंत सफल एवं अति व्यवस्थित छः दिनों का आयोजन जो तीर्थराज सम्मेदशिखर की धरा पर संपन्न हुआ, उसके स्मरण से चित्त शांति को प्राप्त होता है। शान्ति एवं प्रसन्नता इस बात की है कि स्मारक के एक आह्वान पर पूरे भारतवर्ष से टोले के टोले हजारों की संख्या में उस शुद्धात्मा की बात सुनने के लिये पहुंच गये तथा सभी ने अपने अंतस्तल से यह भावना भायी कि जैन शासन पंचमकाल के अंत तक जयवंत वर्ते, उस हेतु स्मारक के अन्तर्गत जो विद्वान बनाने का कारखाना है, वह ऊँचाईयों को चला जाये तथा इस भावना की पूर्ण सफलता पूरे कार्यक्रम में दिखाई भी दी। डॉक्टर साहब एवं उनकी पूरी टीम आगे की धर्म प्रभावना के कार्यों में इसी प्रकार अग्रणी एवं सफल रहे इसी भावना के साथ... **– दिलीप सेठी, कलकत्ता**

## मुमुक्षुओं का महाकुंभ...

शाश्वत तीर्थधाम श्री सम्मेदशिखर की पावन धरा पर टोडरमल स्मारक के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के पावन अवसर पर श्री समयसार मंडल विधान, डॉ. भारिल्लजी के करुणा भरे उद्बोधन, भावी सिद्धों का मेला – सच में इस काल में अमृत बरस रहा है।

समयसार महामंडल विधान के मध्य युवा नक्षत्र डॉ. संजीवजी गोधा द्वारा गाथाओं का सारभूत प्रस्तुतिकरण, पण्डित अभयजी का विशिष्ट विश्लेषण, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा व्याख्या एवं पण्डित विपिनजी का संयोजन विधान को गरिमा प्रदान कर रहा था। पण्डित पीयूषजी का श्रम, पण्डित शुद्धात्म भैया का निर्देशन एवं पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल का मार्गदर्शन साधर्मियों को ऊर्जा प्रदान कर रहा था।

डॉ. भारिल्लजी कृत वैराग्य काव्य का मंचन स्मारक के इतिहास पर डॉक्यूमेन्ट्री अद्भुत अतिभव्य प्रस्तुति रही। यह अनुपम आयोजन था, कोई दैवीय शक्ति काम कर रही थी, मानो स्वर्ग से पूज्य गुरुदेवश्री एवं पण्डित टोडरमलजी अपने सुआशीष की वर्षा कर रहे हों। सच पूछो तो यह मुमुक्षुओं का महाकुंभ ही था।

मैंने भी इस महाकुंभ में आकर तत्त्वज्ञान की गंगा में स्नान कर अपना जीवन धन्य किया है। मैं यह पल कभी नहीं भुला पाऊँगा।

**– संजय शास्त्री, मंगलायतन**

## क्यों न यह परम्परा आगे बढाई जाये ...

सम्मेदशिखर की पावन धरा पर एकसाथ सैंकड़ों शास्त्री विद्वानों का मिलना एक इतिहास बन गया।

यह परम्परा आगे भी बढाई जा सकती है, टोडरमल स्नातक परिषद् का दायरा बढाने की आवश्यकता है। प्रतिवर्ष कोई न कोई कार्यक्रम अवश्य होने चाहिये।

समयसार विधान जैसे आध्यात्मिक विधान में भरी दोपहर में हजारों साधर्मियों का मिलना एक शुभ संकेत है। साधर्मियों की आध्यात्मिक प्यास का प्रतीक है। इसे और अधिक तीव्र किया जा सकता है।

स्नातक विद्वानों को तात्त्विक विषयों पर परस्पर ऊहापोह को प्रोत्साहित करना चाहिये, इससे उनका तत्त्वज्ञान निर्मल होता है और बुद्धि तीव्र। इस कार्यक्रम में भी 1-2 विषयों पर गोष्ठियाँ अवश्य होनी चाहिये थी। खैर...

कुल मिलाकर यह कार्यक्रम आशातीत सफल रहा। इसके लिये स्मारक परिवार को अनेक-अनेक बधाइयाँ एवं अभिनन्दन ! ट्रस्टी मण्डल के नवीन युवा सदस्यों को इसीप्रकार की युवा स्पिरिट कायम रखनी चाहिये।

**– डॉ. राकेश शास्त्री, नागपुर**

## बिछुड़ों को मिलाने वाला मेला...

हमारा देश मेला प्रधान देश है। सामाजिक/धार्मिक/राजनैतिक/व्यापारिक कारणों से देश के प्रत्येक प्रान्त/नगर में मेले लगते रहते हैं। हर मेले की अपने किसी विशिष्ट कारण से ख्याति

भी रही है। दादा-दादी से ऐसे मेलों के संबंध में अनेक आख्यान हम सभी ने सुने हुये हैं, उन कहानियों और भारतीय फिल्मों में भी मेले में बिछुड़ने की कहानियाँ भी हम सभी ने देखी-सुनी-पढ़ी है।

बचपन में जब भी हम कभी मेले में गये तो इन कहानियों के आधार पर ही माँ ने हमेशा सावधान किया कि बेटा! सावधानी से मेले में जाना कहीं तुम गुम नहीं जाना, पिताजी या भइया का हाथ नहीं छोड़ना। यदि गुम गये तो क्या करना यह शिक्षा भी साथ ही दी थी।

तीर्थराज सम्मेदशिखर में दिनांक 9 अक्टूबर से 14 अक्टूबर तक पण्डित टोडरमल स्मारक भवन की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर आयोजित समयसार मण्डल विधान व शिक्षण शिविर एक ऐसा अद्भुत मेला रहा जिसमें लगभग 10 हजार भाई-बहिन देश के कोने-कोने से पधारे, दिनभर भरपूर कार्यक्रम चले परन्तु इस मेले में गुमा तो कोई नहीं अपितु अनेक साधर्मी/स्नातक वर्षों बाद इस मेले में मिले। उनसे मिलकर मन प्रसन्न हो गया और लगा कि एक ओर यह मेला शाश्वत शुद्धात्मा से मिलाने वाला मेला है वहीं यह मेला साधर्मियों से मिलाने वाला भी है।

समयसार विधान के माध्यम से देश के सर्वप्रिय विद्वानों के मधुर कंठों से सभी साधर्मी कुंभ स्नान की तरह समयसार के अमृत में स्नान कर रहे थे एवं गुरुदेवश्री द्वारा समयसार के लिए व्यक्त किये गये उद्गार ''यह तो अशरीरी होने वाला शास्त्र है'' सहज ही भक्तिभाव पूर्वक स्मरण कर रहे थे। शाश्वत तीर्थराज में शाश्वत आत्मा के गीत गाये जाना कितना अद्भुत संगम था। समयसार में वर्णित टंकोत्कीर्ण ज्ञायक भाव स्वरूप स्वाश्रय से ही अनन्त जीव अनन्तकाल तक के लिए इसी तीर्थराज से अनन्त सुखी हुये हैं। एक-एक टोंक से कोडाकोडी मुनिराजों का स्मरण करते हुये लगता था कि जिस तरह इस मेले/शिविर में हजारों साधर्मी एक समयसार के ही गीत गा रहे हैं उसी प्रकार उस काल में समयसार का अनुभव करने वाले मुनिराज वहाँ विचरण करते रहे होंगे वह काल तो धन्य था ही पर सच में यह विधान का काल भी ऐतिहासिक हो गया है।

यह मेला सच में देखा जाये तो मात्र एक भवन/ट्रस्ट/संस्था का गरिमामयी स्वर्णजयन्ती वर्ष ही नहीं था अपितु आध्यात्मिक सत्पुरुषश्री कानजीस्वामी द्वारा प्रवर्तित आध्यात्मिक क्रांति के यशगान हेतु उनके अनुयायिों का मेला था। देश की प्रमुख संस्थाओं के पदाधिकारियों, मुमुक्षु मण्डलों के सदस्यों, देश के सहस्राधिक शास्त्री/अशास्त्री विद्वानों का समागम इस ओर इंगित कर रहा था कि हम गुरुदेवश्री एवं उनके प्रभावना योग तथा उनकी उपस्थिति में संस्थापित प्रथम संस्था पण्डित टोडरमल स्मारक भवन द्वारा प्राप्त तत्त्वज्ञान का ऋण उस तत्त्वज्ञान को आत्मसात् करके ही चुकायेंगे पर जब तक ऐसा न हो तब तक इस मेले जैसे कार्यक्रमों में उपस्थिति देकर कृतज्ञता ज्ञापन का अवसर भी नहीं गमायेंगे।

इस महोत्सव में हमारे कनिष्ठ स्नातकों ने 'पण्डित टोडरमल से टोडरमल स्मारक ट्रस्ट' की जो नाट्य प्रस्तुति दी वह साधर्मियों के मानस पटल पर दीर्घकाल तक अंकित रहेगी। 'समय की ओर' डाक्यूमेन्ट्री में तो स्मारक का इतिहास - भूगोल, रीति-नीति आदि सब कुछ बहुत सुन्दर चित्रित किया गया, जिसने सभी का मन मोह लिया।

इस अनुपम मेले में स्नातकों का उत्साह तो देखते ही बनता था वहाँ उपस्थित/अनुपस्थित सभी स्नातकों ने तन-मन-धन से सहयोग किया। सबके मन में एक ही भावना कि हमें तत्त्वज्ञान प्रदान करने वाले महाविद्यालय एवं अपने गुरुओं के प्रति क्या न कर दिया जाये। स्मारक में अध्ययनरत मेरे कनिष्ठ भ्राताओं ने तो व्यवस्थाओं में अपने नाम को पूरी तरह से समर्पित कर दिया, जिनके प्रति हृदय से साधुवाद कहे बिना नहीं रहा जा सकता।

50 वर्ष से अकल्पनीय सफलता के साथ संचालित संस्था व वहाँ संचालित गतिविधियों को देखते हुये पण्डित टोडरमल स्मारक भवन के संस्थापक आदरणीय श्री पूरणचन्द गोदिका, महामंत्री श्री नेमिचन्दजी पाटनी, महाविद्याल/य के स्वप्नदृष्टा व सरल-सुबोध भाषा में गहनतम तत्त्व को जन-जन तक अपनी लेखनी व वाणी से स्थापना से लेकर अद्यतन निरन्तर सक्रिय डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, महाविद्यालय के स्वप्न को साकार करने में महत्वपूर्ण सहयोग करने वाले श्री कुन्दकुन्द कहानतीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट व उसके संस्थापक अध्यक्ष आदरणीय बाबूभाईजी, यावज्जीवन सहयोग करने वाले श्री महेन्द्रकुमार सेठी, पं. पूनमचन्दजी छाबड़ा एवं अभी भी सहयोग करनेवाले पं. रतनचन्दजी भारिल्ल, पं. शान्तिकुमार पाटील आदि का योगदान निश्चित ही अविस्मरणीय है। साथ ही वर्तमान कार्यकारिणी के व इस मेले को सफलतम रूप प्रदान करने में अहर्निश जागरण करनेवाले पं. परमात्मप्रकाश भारिल्ल, पं. विपिन शास्त्री मुम्बई, पं. शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल, पं. पीयूषकुमार शास्त्री, जयपुर, श्री महीपाल ज्ञायक ध्रुवधाम, श्री सुरेश पाटनी एवं उनके साथी कोलकाता आदि सभी के प्रति कृतज्ञता व स्मारक भवन का गौरवमयी शताब्दी वर्ष में इससे भी उत्कृष्ट मेले का आयोजन करें। **- राजकुमार शास्त्री, द्रोणगिरि**

## परंपरा एवं लीक से हटकर समयसार विधान...

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर के स्वर्ण जयंती महोत्सव के तहत शाश्वत तीर्थक्षेत्र सम्मेदशिखरजी की पावन धरा पर आयोज्य कार्यक्रम अभूतपूर्व स्तरीय एवं दर्शन-ज्ञान-चारित्रवर्धक अविस्मरणीय आयोजन रहा। हाथी, घोड़ों, बग्घियों, बैंडबाजों और जुलूसों के बिना भी यह आयोजन प्रभावक एवं संपूर्ण देश की जैन समाज के लिये अनुकरणीय और मील का पत्थर साबित हुआ है।

विधानों के नाम पर तेज संगीत, (जिसमें शब्द रचना गुम हो जाती है) नृत्य और जो परंपरा चल पड़ी है, उस लीक से हटकर न्यून एवं मधुर (कर्णप्रिय) संगीत के साथ आचार्य भगवान कुन्दकुन्ददेव के ग्रंथाधिराज समयसार की गाथाओं एवं आचार्य अमृतचंद्रदेव की आत्मख्याति टीका के कलशों के परमादरणीय तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंद भारिल्ल द्वारा सहज, सरल, प्रांजल एवं प्रवाहमयी भाषा में अनुदित ''समयसार विधान'' ने शाश्वत तीर्थ पर शाश्वत आत्मा को जानने, सुनने, वाचने, चिन्तन एवं मनन का सहज सुलभ अवसर प्रदान किया। साथ ही पण्डित श्री शांतिकुमारजी पाटील द्वारा लिखित उत्थानिकाओं और ऊँ ह्रीं ने विधान को सुग्राह्य बना दिया तो पण्डित अभयकुमारजी, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा की समझाइश (विधान के मध्य) ने शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं उबाऊपन से उबार दिया। सिद्धक्षेत्र के अनेकानेक आकर्षणों एवं प्रात:कालीन भोजन के तत्काल बाद भी विधान का समय होने पर सहस्राधिक इन्द्र-इन्द्राणियों की शत-प्रतिशत उपस्थिति संपूर्ण कार्यक्रम की सफलता की परिचायक है। **- रितेश जैन, बांसवाड़ा**

## अद्वितीय...

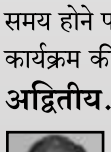

शाश्वत तीर्थराज के दर्शन कर तो जनसमूह अविभूत होता ही है स्वाभाविक भी है कि होना ही चाहिए किन्तु हम स्वर्ण जयन्ती समारोह के प्रसंग पर सम्मलित हो रोम रोम रोमांचित कर देने वाले क्षण जीवन में पहली बार आये यह अद्भुत संयोग नयनों के सम्मुख देखकर दुनिया के सर्वोत्कृष्ट आनन्द का वेदन किया ऐसा लगा।

सन् 1984 में मैंने उपाध्याय में प्रवेश लिया उसके उपरान्त अनेकों अनुष्ठानों

में सम्मलित होने एवं सहभागिता निभाने के अवसर प्राप्त हुए लेकिन स्वर्ण जयन्ती समारोह समयसार विधान पर्वतराज की वन्दना आदि कार्यक्रमों कि अनुपमेय आनन्द को व्यक्त नहीं किया जा सकता।

इतनी बड़ी संख्या में युवा विद्वानों का समागम धार्मिक अनुष्ठानों का धारा प्रवाह संचालन आत्मार्थी भाई-बहिनों के अनेकों प्रकार के विचारों का आदान-प्रदान मुमुक्षु समाज के नेतृत्व का मंच से उद्बोधन अनेकों भावी आमंत्रण आदि, जिसमें मुमुक्षु समाज में एक नई ऊर्जा का संचार अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। साधुवाद के पात्र आयोजक-प्रायोजक मण्डल तो हैं ही किन्तु धन्य है वे लोग जो इस अनुष्ठान में सम्मलित होकर कृतार्थ हुए।

कहने में किसी को भी किसी प्रकार का संकोच नहीं होगा कि स्वर्ण जयन्ती समारोह बस! अद्वितीय...अद्वितीय... अद्वितीय...।

**- पण्डित रतन चौधरी, कोटा**

## अतिशयकारी अनुभूति...

टोडरमल स्मारक की स्वर्ण जयंती महोत्सव स्वर्णिम उपलब्धियों को प्राप्त कराने वाला रहा।

आ.दादाद्वय की वर्षों की साधना और तत्त्वप्रचार के प्रतिफल की एक झलक इस अवसर पर देखने को मिली। जिसप्रकार बचपन से पिता की छत्रछाया में रहे पुत्र स्वयं की उन्नति हेतु देश-परदेश में चले जाते और वर्षों बाद उन्हें पिता की गोद और भाईयों के स्नेह की प्राप्ति होने पर जो अनुभूति होती है, ऐसी ही अतिशयकारी अनुभूति इस आयोजन में रही; पाँच दिन में पूर्ण समयसार का रसास्वादन, टोडरमल से टोडरमल स्मारक तक नाटक का मंचन, वैराग्य महाकाव्य की प्रस्तुति, छोटे दादा और सुमतजी भाईसाहब के प्रवचन और शाश्वत सिद्धक्षेत्र की वंदना आदि अनेक सुखद अनुभूतियों वाला यह महोत्सव रहा। देश की सभी प्रमुख संस्थाओं के प्रतिनिधियों की सहभागिता भी इस आयोजन की गरिमा को दर्शाती है। आवास, भोजन, आवागमन व अन्य सभी व्यवस्था उच्चस्तरीय रही। पूरी टीम, आयोजन समिति व हम सबको साधुवाद और बधाई। **- धर्मेन्द्र शास्त्री, कोटा**

## ऐतिहासिक सफल कार्यक्रम...

स्वर्ण जयन्ती समारोह का आयोजन बहुत ही शानदार एवं सुन्दर था। सभी के आवास भोजन आदि की शानदार व्यवस्था थी। सभी वरिष्ठ विद्वानों के प्रवचनों का भरपूर लाभ मिला।

समयसार विधान पूजन को युवा विद्वान डॉ. संजीव गोधा द्वारा बहुत ही सरल भाषा में समझाया गया। टोडरमल से टोडरमल स्मारक नाटक, डॉ. भारिल्ल द्वारा रचित महाकाव्य वैराग्य के आधार पर मंचित 'वैराग्य' नाटक, गायक गौरव सौगाणी की आध्यात्मिक भजन संध्या आदि सभी कार्यक्रमों ने मन्त्रमुग्ध कर दिया। आयोजकों एवं समस्त सहयोगियों को इस ऐतिहासिक सफल कार्यक्रम के लिये बहुत-बहुत बधाई।

**- योगेश कुमार टोडरका, जयपुर**

## स्वर्ण जयन्ती...

इस वर्ष जो स्वर्ण जयन्ती का प्रोग्राम सम्मेदशिखर में हुआ, वह अद्वितीय रहा। सभी प्रोग्राम शान्तिपूर्ण हुये। हर व्यक्ति के मुख से एक ही शब्द निकलता था कि कितनी बढिया व्यवस्था है। मैं तो उन लोगों से कहती थी कि जो बढिया व्यवस्था आप देख रहे हो वह व्यवस्था टोडरमल स्मारक और कलकत्ता मुमुक्षु मण्डल के सहयोग से हुई है। सभी कार्यकर्ताओं ने तन-मन-धन से सहयोग किया है। वहाँ जनता की भीड़ तो अपूर्व ही थी, सभी व्यवस्थायें देखने लायक थीं, अनुकरणीय भी हैं।

समयसार विधान तो पहली बार होने से बहुत ही आनंद व उत्साह के साथ हुआ, उसके आधार से जो विद्वानों ने अर्थ समझाया, उससे जनता को समझ में आया कि समयसार में क्या विषय है, बहुत ही सरलता से अर्थ समझाया गया।

विद्वानों के प्रवचन, बालकों की कक्षायें व सांस्कृतिक कार्यक्रम बहुत अच्छे व शिक्षाप्रद थे, जिसका जनता ने भरपूर लाभ लिया। सभी लोगों के मुंह से यही सुनने को मिलता था कि ऐसे तत्त्वप्रेरक प्रोग्राम हमेशा होने चाहिये। सभी कार्यकर्ताओं को धन्यवाद जिनके दिमाग की यह उपज है कि स्वर्ण जयन्ती समारोह शिखरसम्मेद में होना चाहिये। अस्तु...

**- कमला भारिल्ल, जयपुर**

## टोडरमल स्मारक : एक उगता सूर्य...

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी एक उदयमान सूर्य के समान सुशोभित थे, हैं और युग-युग तक रहेंगे।

इस कलिकाल में जब सब ओर मात्र भौतिकता का ही बोलबाला है, वहाँ उन्होंने अध्यात्म का डंका बजाया जिसकी गूँज आज मात्र हिन्दुस्तान में ही नहीं वरन् सारी दुनिया में सुनाई दे रही है, यह सब अद्भुत और असामान्य है।

पण्डित टोडरमल स्मारक भी उन्हीं की देन है। जब उनके हाथ मोक्षमार्ग प्रकाशक लगा और वे गदगद होकर बोल उठे -''इतनी छोटी सी उम्र में ही टोडरमलजी ने तो गजब ही कर दिया है, यह तो अशरीरी होने का मार्ग है।''

उन्होंने स्वयं तो मोक्षमार्ग प्रकाशक अनेकों बार पढा ही शिविरों के माध्यम से जगत को भी इससे परिचित करवाया, जिसे सुनकर अध्यात्मीजनों को गहरे से उसे समझने की उत्सुकता जागी।

एक शिविर में जयपुर के सेठ श्री पूरनचंदजी गोदिका पधारे हुए थे, एक बार प्रवचन के दौरान उन्हें संबोधित करते हुए गुरुदेवश्री ने कहा कि 'ऐ सेठ ! टोडरमलजी तुम्हारे जयपुर के थे, तुम्हारे गोत्रज थे, तुम उनका स्मारक बनाओ!

बस फिर क्या था ?

गुरुदेव का इतना कहना था कि गोदिकाजी के मन में उछाल आ गया; उन्होंने जयपुर आकर बिना किसी अन्य के सहयोग के ही यह कार्य शुरु कर दिया, न तो कोई इन्जीनियर और न ही कोई ठेकेदार, सबकुछ सिर्फ अपने ही बूते पर, उन्होंने इतना बड़ा काम अपने कंधे पर ले लिया। आज से 50 वर्ष पहले जब वह बन गया तो उन्होंने गुरुदेवश्री से प्रार्थना की कि आपके हाथ से ही इसका उद्घाटन होना चाहिये। गुरुदेवश्री ने तुरंत स्वीकृति दे दी। गोदिकाजी ने पंचकल्याणक से भी बढकर वेदी प्रतिष्ठा करवाई और पांच दिन का महामहोत्सव आयोजित किया।

गुरुदेव एक बार फिर बोले -''यह जड़ स्मारक तो बन गया, अब इसमें कुछ जीवंत काम करो'' तब गोदिकाजी बोले कि ''गुरुदेव ! आप ही बताओ हम क्या करें ?''

गुरुदेव ने पण्डित हुकमचंदजी का नाम सुझाया, तब श्री खेमचंदभाई, बाबूभाई और गोदिकाजी ने उनके पास जने का निर्णय किया। इन्दौर में शिविर के दौरान वे सभी सात दिन वहाँ रहे और तभी गोदिकाजी ने उन्हें जयपुर आने का निमंत्रण दे दिया तो पण्डितजी ने पूछा कि काम क्या करना है ? तब गोदिकाजी ने जैनधर्म की युनिवर्सिटी चलाने की इच्छा व्यक्त की।

स्मारक आकर जब इस कार्य को मूर्त रूप दिया गया तब आ.बाबूभाई,

पाटनीजी, सेठीजी आदि सभी ने डॉ. साहब को बहुत प्रोत्साहित किया, उन्होंने कहा कि ''आप तो काम कीजिये, बाकी सब हम संभाल लेंगे''। उक्त सभी लोगों ने अपनी अंतिम साँसों तक डॉ. साहब के कंधे से कंधा लगाकर कार्य को मूर्त रूप प्रदान किया। पूज्य गुरुदेवश्री से लेकर खेमचंदभाई, बाबूभाई आदि सभी ने सोने में सुहागा का काम किया।

डॉ. साहब ने अल्प समय में ही प्रशिक्षण शिविरों का संचालन किया, उसकी किताबें लिखीं। स्थान-स्थान पर संपन्न हुए 50 शिविर आज तक अपना प्रभाव दिखा रहे हैं। डॉ. साहब ने जो भी कार्य प्रारम्भ किये वे सभी अविरल धारा प्रवाह चल रहे हैं।

उन्होंने जिन कार्यों का संचालन किया उनमें से मेरी दृष्टि में दो कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण हैं - एक महाविद्यालय का संचालन और दूसरा सत्साहित्य का प्रकाशन, जो कि युगों-युगों तक अक्षुण्ण बने रहेंगे।

गुरुदेव ने तो समयसार व पंचपरमागमों को जन-जन की वस्तु बनाया ही था; पर डॉ. साहब ने भी उन्हीं में से कतिपय शास्त्रों का अनुशीलन सरल, सुबोध व सुगठित भाषा में करके उसमें चार चाँद लगा दिये। क्रमबद्धपर्याय तो उनके रग-रग में बसी है, जिसने देश में ही नहीं विदेशों में भी जैन-अजैन सभी को सोचने को बाध्य कर दिया।

उनकी लेखनी किसी एक ही विषय पर नहीं सभी विषयों पर चली। या यूं कहिये कि गद्य, पद्य, कहानी, उपन्यास, निबंध, महाकाव्य, खंडकाव्य भी उनसे अछूते नहीं रहे और तो और अब विधान भी ...।

आज स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अवसर पर शाश्वत तीर्थधाम सम्मेदशिखरजी में श्री समयसार विधान की गूँज ने जन-जन को उद्वेलित कर दिया है। इस विधान का आयोजन पण्डित टोडरमलजी द्वारा जयपुर में आयोजित इन्द्रध्वज मंडल विधान की याद दिलाता है। पूज्य गुरुदेवश्री ने मिथ्यात्वरूपी अन्धकार का नाशकर सम्यग्ज्ञान सूर्य को प्रकाशित किया था और पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट और डॉ. भारिल्ल ने भी अपनी कार्यप्रणाली और लेखनी से उसकी प्रभा सारे जग में बिखेर दी है। टोडरमल स्मारक आज का उगता हुआ सूर्य है। **- गुणमाला भारिल्ल, जयपुर**

## स्वर्णिम वर्ष...

ज्ञान ! ज्ञान !! ज्ञान !!! ज्ञान ही एकमात्र ऐसा साधन है, जो हमें पारमार्थिक प्रगति के लिए तो अनिवार्य है ही; पर सांसारिक प्रगति के लिए भी आवश्यक है। ज्ञान की उपयोगिता असंदिग्ध है। शिक्षा की इसी जीव कार्य आवश्यकता को महसूस करते हुए देश में शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न कदम उठाए जा रहे हैं, ताकि बच्चा बच्चा शिक्षित हो।

लौकिक शिक्षा के प्रचार प्रसार के कदम सहजतर उठती है। धार्मिक शिक्षा प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में डॉ. भारिल्ल ने टोडरमल स्मारक भवन के माध्यम से ही कदम उठाये हैं।

डॉ. भारिल्ल की स्वयं की शिक्षा-दीक्षा धार्मिक विद्यालयों में हुई। व इस विद्यालयों का महत्त्व बखूबी जानते हैं, पहचानते हैं। धार्मिक शिक्षा के लिए दो स्तरों पर विशेष रूप से कार्य किए - (1) बालकों के स्तर (2) किशोरों के स्तर पर।

बालकों के लिए देशभर में स्थान-स्थान पर पाठशालायें खुलवाईं उनकी समुचित, सुव्यवस्थित, आसान पढ़ाई के लिए पढ़ाने वाले अध्यापकों की सुप्रशिक्षित टीम प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से तैयारी की गई। साथ ही साथ तत्संबंधी व्यवस्थित कोर्स का निर्माण भी उपयुक्त विद्वानों के सहयोग से आपने किया। इसप्रकार शिक्षण तीन केन्द्र बिन्दु - (1) शिक्षक (2) छात्र (3) विषय के प्रति सतर्क रहे हैं।

यद्यपि बालकों की पाठशाला के लिए प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षित अध्यापकों की व्यवस्था आरंभ हो गई थी; परन्तु जैनदर्शन अधिकृत विद्वानों की कमी गहराई से अनुभव की जा रही थी।

किशोरवय वाले बच्चों को व्यवस्थित ज्ञान देकर इसकी की जा सकती थी। इसकी मोटी मोटी संस्थाओं में डॉ. साहब ही थे। जो कि संपादक थे प्रवेश पूर्व में ही आपने श्रीमान पूरणचन्दजी गोदिका को बनाकर दिखाई भी थी। गोदिकाजी का स्वप्न ही जैन युनिवर्सिटी का था। तो सपना साकार करने का साल सन् 1977 में आपने इसका निर्णय मई 1976 में मुम्बई में हो गया था, पर विधिवत उद्घाटन 24 जुलाई 1977 को जयपुर में हुआ।

महाविद्यालय के प्रथम बैच में यद्यपि 13 विद्यार्थी विद्वान बनकर निकले थे, किन्तु अभी प्रतिवर्ष 42 विद्यार्थी निकल रहे हैं। इसप्रकार अभी 2016 तक 738 छात्र जैनदर्शन के अधिकृत विद्वान बने हैं।

यह संख्या तो टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय से निकले विद्वानों की है, पर इस महाविद्यालय से ही निकले प्रतिभाशाली विद्वानों के निर्देशन में इसी पेटर्न पर कोटा, बाँसवाड़ा आदि में भी इसीप्रकार के महाविद्यालय आरंभ हो गए हैं। वहाँ से भी प्रतिवर्ष अनेक विद्वान बनने आरंभ हो चुके हैं।

टोडरमल जैन सिद्धान्त महाविद्यालय यद्यपि लड़कों के लिए ही है, इसमें लड़कियों को प्रवेश नहीं मिलता है, लेकिन सन् 1995 से डॉ. भारिल्ल की ही नातिन (बेटी की बेटी) कु. स्वानुभूति के द्वारा शास्त्री में प्रवेश लेने के पश्चात् अनेकों लड़कियाँ भी स्वयं की व्यवस्था से वहाँ रहकर शास्त्री डिग्री हासिल कर विदुषी बनने लगी हैं। धीरे धीरे लड़कियों को भी जैनदर्शन का व्यवस्थित ज्ञान करने की आवश्यकता इतनी अधिक महसूस की जाने लगी कि कुछ वर्षों पूर्व ही शाश्वत धाम उदयपुर में भी मात्र लड़कियों के लिए भी महाविद्यालय आरंभ हो गया।

टोडरमल जैन सिद्धान्त महाविद्यालय से निकले विद्वान छात्रों की जैनदर्शन पर विशेष पकड़ कर सूक्ष्मज्ञान द्वारा जैनदर्शन में सूक्ष्म ज्ञान के अध्ययन करने की व्यवस्था है।

इसी की पूर्ति के लिए डॉ. भारिल्लजी के निर्देशन में उन्हीं के प्रतिभाशाली छात्र विद्वान पण्डित पीयूष शास्त्री द्वारा मुक्त विद्यापीठ संचालन किया जा रहा है। जिससे जिज्ञासु व्यक्ति जैन शास्त्रों स्वयं अध्ययन कर 'विशारद' की उपाधि प्राप्त करते हैं। इस योजना से घर बैठे अनेकोंजन लाभान्वित हो गए हैं, हो रहे हैं।

टोडरमल स्मारक के इस स्वर्ण जयन्ती वर्ष में, विद्वान बनाने के स्वर्णिम कार्य ने मुक्तविद्यापीठ की इस घड़ी में एक नया अध्याय आरंभ हो गया है, जिसमें जैन शास्त्रों का विधिवत अध्ययन विद्वानों के सहयोग से कराया जा रहा है।

फरवरी 2016 में आरंभ हुए इस कोर्स का नाम 'परमागम ऑनर्स' है। इसमें नवीन आब्जेक्टिव पेपर प्रणाली को अपनाया जा रहा है। ओपन बुक एग्जाम लिया जाता है। साथ जैन सिद्धानों को जीवन में उतारने की कला को विकसित कया जा रहा है।

यह कोर्स भी डॉ. भारिल्ल के निर्देशन में टोडरमल महाविद्यालय की प्रथम रेगूलर महिला स्नातक शास्त्री विदुषी श्रीमती स्वानुभूति द्वारा संचालित किया जा रहा है।

इस कोर्स में आधुनिक संसाधनों का भरपूर उपयोग किया जिससे देश

विदेश के लगभग 250 छात्रों ने प्रथम चरण में ही ज्ञानयज्ञ में प्रवेश कर लिया है। ऑनलाईन विद्वानों की सुविधान करने से यू.एस., आस्ट्रेलिया, कनाड़ा, सिंगापुर आदि सुदूरवर्ती के निवासी भी इस पाठ्यक्रम से लाभान्वित हो रहे हैं।

इसप्रकार हम देख रहे हैं कि विद्वान बनाने की जो फैक्ट्री 13 से आरंभ हुई थी, वह आज अपनी अनेक शाखाओं के साथ अनेक गुना अधिक उत्पादन कर रहे हैं।

यह विद्वानों की फैक्ट्री दिन-दूना-रात चौगुना उत्पादन को जब अपने इस स्वर्णिम कार्य की स्वर्णजयन्ती मनाए इसी भावना से विराम लेती हूँ।

**- डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, मुम्बई**

## समयसार से स्वसमय की ओर...

कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य कुन्दकुन्द द्वारा रचित ''समयसार जन जन के हृदय में बस जाए इस भावना से ''समयसार विधान'' की परिकल्पना ने स्वर्ण जयन्ती समारोह को अविस्मरणीय बना दिया।

कहा जाता है कि बनारसीदासजी के समय में आगरा की गलियों में लोग ''समयसार नाटक'' के पद्य गाते फिरते थे। आज पुनः समयसार जन-जन के कण्ठ में बस गया।

''समयसार विधान'' के माध्यम से जो साधर्मी समयसार की विषय वस्तु से परिचित नहीं थे उन्होंने उसका परिचय प्राप्त किया, जिन्होंने प्रसंगवश गिनी-चुनी गाथाओं को समझा था उन्होंने पाँच दिन में पूरे समयसार की विषय वस्तु समझी और जो समयसार के पाठी रहे हैं उनका समयसार का पुनः पूरा स्वाध्याय हो गया।

वर्षों से तत्त्व के प्रचार-प्रसार में लगे रहकर भी अपने संदर्भ में चुप रहने वाले पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने इस महोत्सव में प्रथम बार अपने जन्मदाता के परिचय के साथ ट्रस्ट के 50 वर्ष के इतिहास का परिचय ''समय की ओर'' नामक डाक्यूमेन्ट्री फिल्म के माध्यम से कराया।

आज गुरुदेव श्री के तत्त्वज्ञान का वटवृक्ष सबको लहलहाता दृष्टिगोचर हो रहा है उसके बीजारोपण से वटवृक्ष बनने की कहानी देख-जानकर जन समुदाय को आश्चर्य मिश्रित सुखद अनुभूति हुई कि किस प्रकार डॉ. भारिल्ल ने गोदिकाजी, पाटनीजी, बाबूभाई, पं. रतनचन्दजी आदि की सहायता से अपनी दूरगामी योजनाओं से क्रमिक विकास को ध्यान में रखते हुए जैन तत्त्वज्ञान के वस्तु-स्वातंत्र्य, क्रमबद्धपर्याय, नयज्ञान आदि महान् सिद्धान्तों को सर्वग्राह्य बना दिया।

फिल्म में टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय के माध्यम से पाँच वर्षों में बालक से विद्वान बनने की प्रक्रिया को पत्थर में से भगवान बनने के रूपक के द्वारा बड़ी ही खूबसूरती से प्रस्तुत किया गया है जिसे प्रेक्षकों ने खुले दिल से सराहा।

मैं सोचती हूँ कि जब स्मारक द्वारा किए गए कार्यों का संक्षिप्त स्वरूप बताने में 1 घंटे का समय लगा (जिसमें संक्षिप्त कार्याविधि के कार्यों को स्थान नहीं दिया गया है) तो उन कार्यों को क्रियान्वित कर सफल बनाने की प्रक्रिया बताई गई होती तो फिल्म की लम्बाई क्या होती? पर क्या कभी अनेक वर्षों में अनेक लोगों के एक-एक समय के कठिन परिश्रम को अभिव्यक्त किया जा सकता है? प्रसव पीड़ा क्या कभी कही जा सकती है?

प्रसन्नता की बात यह रही कि मुमुक्षु समाज ने स्मारक ट्रस्ट की समस्त गतिविधियों को हाथों-हाथ लिया और वहाँ से निकली एक-एक बूँद को अमृत समान ग्रहण कर तत्त्वज्ञान को हृदय में बसा लिया जिसकी परिणति दिखी डॉ. भारिल्ल द्वारा रचित ''वैराग्य'' महाकाव्य पर आधारित नाटक ''वैराग्य'' के मंचन के समय, जब तत्त्वज्ञान की एक-एक पंक्ति पर हजारों तालियाँ बजीं। नाटक के निर्देशक भी जो ''तत्त्वज्ञान गर्भित पंक्तियों को अनावश्यक व विस्तारभय से निकाल देना चाहते थे और मेरे यह समझाने पर कि ''हमारी जनता राजुल-नेमि के संवाद में भी तत्त्वज्ञान ही सुनना चाहती है'' तालियों की गड़गड़हाट से समझ गए कि ये जन समुदाय कुछ विशिष्ट ही है।

मुमुक्षु समाज के इतर अन्य धार्मिक कार्यक्रमों का स्वरूप आज भी एक मेले से अलग कुछ नहीं होता बाहर लगे हुए स्टॉल पर भक्ष-अभक्ष्य खाओ-पिओ, भोग-विलास की सामग्री खरीदो और कुछ घंटे फिल्मी गानों की तर्ज पर पूजा-भक्ति कर लिया और हो गया धर्म। इन सबसे भिन्न दिन में तीन बार शुद्ध-सात्विक भोजन और पूरा दिन तत्त्व के लिए समर्पित । आश्चर्यचकित कर देने वाली बात तो यह थी कि पाण्डाल में इतनी बड़ी संख्या में उपस्थित जनसमुदाय और आयोजकों को छह दिन में एक बार भी शान्ति बनाए रखने की अपील नहीं करनी पड़ी। मुमुक्षु समाज की तत्त्वरुचि की पराकाष्ठा तो यह है कि यदि 10-20 मिनिट से अधिक समय आमंत्रण, विमोचन या सम्मान आदि के कार्यक्रमों को दे दिया जाए तो श्रोता बैचेन हो उठते हैं कि हमारे व तत्त्वज्ञान के बीच में व्यवधान क्यों आ गया।

''ये सुसंस्कृत श्रोता और निखालिस तत्त्वज्ञान की बात'' यह संस्कृति हमें गुरुदेव श्री की देन है और उसके बाद इस अविरल धारा को बनाए रखने पुष्पित और पल्लवित करने का सराहनीय कार्य टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने बखूबी किया है।

जिस प्रकार बच्चे का मुख देखकर माँ प्रसव पीड़ा भूल जाती है, लहलहाती खेती देखकर किसान अपना श्रम भूल जाता है, उसी प्रकार संसार के विषय-भोगों में आनन्द मानने वालों को उससे भिन्न ''तेरी आत्मा में ही सुख हैं'' और कर्त्ताबुद्धि के अभिमान में चूर इस संसारी को ''तू अकर्त्ता है'' यह सुनने के लिए घंटों बैठा देखकर दादाद्वय व उनके पूर्व व आज के सहयोगी अपना श्रम भूल गए होंगे।

वस्तुतः समय के लिए, समय के द्वारा, समय का यह आयोजन पूर्णतः सफल रहा।

आगे भी ''मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ'' की गूँज सदा गूँजती रहे ऐसी भावना के साथ मैं विराम लेती हूँ।

**- अध्यात्मप्रभा जैन, मुम्बई (एम.ए., जैनदर्शनाचार्य)**

## पंचमकाल का आश्चर्य...

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का स्वर्ण जयन्ती समारोह का ऐतिहासिक कार्यक्रम हमारे दिलोदिमाग में अमिट छाप छोड़ गया।

मैंने और आपने अपने जीवन में बहुत विधान, शिविर, पंचकल्याणक देखे होंगे, जहाँ हजारों लोगों की भीड़ भी होगी। लेकिन सिर्फ समयसार की चर्चा को सुनने के लिए 10-12000 लोगों का इतना बड़ा मेला - यह पंचम काल के किसी आश्चर्य से कम नहीं है। दोनों दादा सहित देश के 1000 विद्वान एवं मुमुक्षु समाज की प्रत्येक संस्था के प्रतिनिधियों की उपस्थिति ने चार चाँद लगा दिए।

ये मुमुक्षुओं का अपूर्व महासम्मेलन था, जहाँ वर्षों बाद अनेक साधर्मियों से एक ही स्थान पर मिलने का अवसर मिला। सम्मेदशिखरजी की भूमि पर भावी सिद्धों का मिलन, ऐसा लगता था मानो अनन्त काल तक सिद्धालय में

एक साथ रहने से पहले यहाँ एकत्रित हुए हों।

यह मेरा सौभाग्य है कि बचपन से ही टोडरमल स्मारक से जुड़ान रहा एवं दोनों दादा का भी विशेष स्नेह मिलता रहा है। मैं अपने आपको स्मारक परिवार का ही अभिन्न अंग मानती हूँ, अतः इस पूरे आयोजन में ऐसा ही अनुभव रहा कि यह अपना ही कार्यक्रम है।

हजारों मुमुक्षुओं की उपस्थिति में भी इतनी शालीनता, शान्ति व स्वच्छ छवि का प्रदर्शन अन्य समाज वालों के लिए भी प्रेरणा बन गया - यह सब गुरुदेवश्री से प्राप्त तत्त्वज्ञान का ही प्रभाव है।

इतने बड़े आयोजन में इतनी सुविधाएँ जुटाने, व्यवस्था करने के लिए आयोजकों, ट्रस्ट के पदाधिकारियों व सबसे ज्यादा आभार महाविद्यालय के सभी विद्यार्थियों का है, जिन्होंने अपने साधर्मी वात्सल्य से सभी लोगों का मन जीत लिया। **- संस्कृति गोधा, जयपुर**

## कोटि जन्मों के पुण्य का फल...

टोडरमल स्मारक जिसके तत्त्वावधान में जहाँ महाविद्यालय एवं शिविरों के माध्यम से ज्ञान की गंगा बह रही हो व बड़े दादाश्री और छोटे दादाश्री के नेतृत्व में लगभग 1,000 विद्वान तो प्रथम 50 वर्ष में ही तैयार हो गए हों, तो पंचम काल के शेष बचे 18,500 वर्षों में और कितने विद्वान तैयार होंगे इसकी तो कल्पना भी हमें भाव विभोर कर देती है, उसी टोडरमल स्मारक की तरह ही इसकी स्वर्ण जयन्ती का कार्यक्रम भी अद्वितीय था।

अथाह जन समुदाय की मौजूदगी में ऐसे आध्यात्मिक रस से भरे आनन्दायक कार्यक्रम केवल इस शिखरजी की पावन धरा पर और ऐसे आयोजकों के साथ ही होना संभव था।

हर दिन के कार्यक्रम एक से बढ़कर एक थे।

ग्रंथाधिराज श्री समयसारजी पर महामंडल विधान ने तो पूरा समय का सार ही बतला दिया।

आचार्यकल्प पंडित टोडरमलजी के जीवन पर नाटक हो, भजन संध्या हो, या फिर नेमीनाथ भगवान पर वैराग्यमयी नाटक सभी अकल्पनीय थे।

विश्व में मौजूद लगभग सभी श्रेष्ठ विद्वानों का एक साथ एक जगह पर मिलन समारोह भी गजब था। हर दिन छोटे दादाश्री, सुमतप्रकाशजी और अन्य सभी विद्वानों के अध्यात्म के सूक्ष्म विषयों पर प्रवचनों से भी हमें बहुत लाभ और प्रेरणा मिली।

एक साथ 10,000 से अधिक साधर्मियों की भोजन और आवास व्यवस्था उपलब्ध करवाना और वो भी बिना किसी तकलीफ के कोई छोटा-मोटा कार्य नहीं था।

हर एक विद्यार्थी कार्यकर्ता और शिविर के आयोजकों की दिन-रात की बेहद कड़ी मेहनत से ही ये कार्य इतना सफल और आनन्ददायक रहा।

हम इन सभी कार्यक्रमों के साक्षी बन पाए ये जरूर हमारा कोटि-कोटि जन्मों का पुण्य फलित होगा।

आगे भी जल्दी-जल्दी ऐसे शानदार शिविरों का आनन्द हम ले पायें इसके लिए आयोजकों से हमारी नम्र विनती है और उनका बहुत अभिननन्दन करते हैं। **- वीरेश कासलीवाल, सूरत**

## अद्भुत दृश्य...

श्री सम्मेदशिखर में स्वर्ण जयंती वो भी श्री ज्ञानतीर्थ टोडरमल स्मारक भवन की; मानो साक्षात् भगवान महावीर के समवशरण में आ गये हों और सिद्ध बनने की तैयारी शुरु हो गई हो। जिस दिन से कार्यक्रम चालू हुआ उस दिन से लेकर कार्यक्रम के अंत तक सब कुछ भूलकर मात्र एक भगवान बनने की भावना ही प्रबल रही। चारों तरफ एक ही चर्चा थी कि कोई भी प्रोग्राम छूट न जाये। एक के बाद एक प्रोग्राम और दोपहर में विधान 1008 इंद्र-इंद्राणी एक साथ विधान करते हुए, वो दृश्य वाकई अद्भुत था। कुछ भी हो, चारों तरफ मात्र सिद्ध बनने की भावना ही प्रमुख थी और बाहर की कोई भी व्यवस्था हो सब एकदम व्यवस्थित थी। जीवन में ऐसे अवसर बार-बार आये - यही भावना है।

**- विवेक शास्त्री, इन्दौर**

## स्वर्ण जयन्ती महोत्सव एक अविस्मरणीय अनुभव...

मेरी धार्मिक जन्मभूमि ज्ञानतीर्थ पण्डित टोडरमल स्मारक भवन का 50वाँ 'स्वर्ण जयन्ती वर्ष' मेरे जीवन में एक अविस्मरणीय अनुभव को लेकर आया; क्योंकि इसमें मुझे आदरणीय छोटे दादा के कुशल निर्देशन एवं विपिनजी, बबलू भैया एवं पीयूषजी के मार्गदर्शन में 'स्वर्णजयंती महोत्सव वर्ष' में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ, जिसमें मुझे वास्तव में बहुत अधिक सीखने को मिला, किसी भी कार्य को कैसे करें ? उसमें आने वाली कठिनाईयों को कैसे आसानी से दूर करें ? इन सब बातों को कदम-कदम पर बबलू भैया एवं पीयूषजी ने मुझे सिखाया; अत: दोनों का बहुत-बहुत आभारी हूँ।

तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में आयोजित समयसार विधान एवं शिक्षण शिविर में मुझे आवास व्यवस्था की जिम्मेदारी दी गई, जिसमें नवीनजी शास्त्री फिरोजाबाद, स्वतंत्रजी शास्त्री खरगापुर, सौरभजी शास्त्री खड़ैरी, ऋषभ शास्त्री भिण्ड, अरविन्द शास्त्री बंडा, विनीत शास्त्री हटा एवं महाविद्यालय के वर्तमान विद्यार्थी, जिन्होंने दिन-रात कार्य कर हमें पूर्ण सहयोग प्रदानकर कार्यक्रम को सफल बनाया, उनको बहुत-बहुत धन्यवाद! आभार ! जय जिनेन्द्र !

**- रूपेन्द्र शास्त्री, छिन्दवाड़ा**

## कल्पनातीत आयोजन...

टोडरमल स्मारक का स्वर्ण जयन्ती महामहोत्सव आयोजन श्री सम्मेदशिखरजी में होना अत्यंत आनंददायक रहा। मैं स्मारक से भावनात्मक रूप से जुड़ा हुआ हूँ, ऐसा सौभाग्य कुछ ही लोगों को प्राप्त हुआ है। मेरा जन्म भी यहीं हुआ है और सारा बचपन भी स्मारक की चारदीवारी में खेलते हुए बीता है। आज से लगभग तीन साल पहले स्मारक के निकट भविष्य में 50 साल पूरे होने का एहसास होने पर, मैंने अपनी भावना सभी अग्रज और समस्त ट्रस्टीगण को बतायी थी और मैं हर्षोल्लासपूर्वक इसके भव्य आयोजन के लिये अत्यंत आतुर था। इस स्वर्ण जयन्ती वर्ष के दौरान मन में उत्साह इस बात का भी था कि तत्त्वप्रचार वर्षभर अपने चरम पर रहेगा और पूरे देश में जिनशासन की लहर दौड़ेगी, नए लोगों को रुचि लगेगी, जन-जन का तत्त्वअभ्यास बढेगा और आज बिना किसी संशय के यह कह सकता हूँ कि सब कुछ कल्पनातीत रूप से साकार हुआ है। यह सब भी तब ही सम्भव हो पाया जब स्नातकों की इतनी बड़ी फौज के द्वारा जिनधर्म पताका गाँव-गाँव शहर-शहर फहराई गई। दिन-रात मेहनत करके कंधे से कंधा मिलाकर इसे सफलता की ओर महाविद्यालय के वर्तमान विद्यार्थी और उसके स्नातकों के योगदान के कारण ही सम्भव हुआ है।

वर्षभर की तैयारी, अतिउत्तम व्यवस्था की सोच और 'माइक्रो मैनेजमेन्ट' का श्रेय अगर किसी को जाता है तो आदरणीय शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल व आपके अनन्य साथी पीयूषजी शास्त्री व टीम एवं कलकत्ता मुमुक्षु मण्डल को, जिन्होंने अपनी अति व्यस्तताओं के बीच इतने बड़े कार्य का जिम्मा लिया।

आदरणीय विपिनजी शास्त्री, मुम्बई ने वर्षभर देश में घूमकर, साधर्मियों से सम्पर्क द्वारा यह निश्चित किया कि सभी इस महा यज्ञ से जुड़ें व लाभ लें।

आयोजन के दौरान मुझे 'ऑन टॉज़' की जिम्मेदारी दी गई थी जो स्पेशल टीम हर विभाग के को-ऑर्डिनेशन और क्राइसिस मैनेजमेन्ट में पूर्ण रूप से लगी रही। मैं धन्यवाद करना चाहूँगा सभी साथियों का जिन्होंने 24 घंटे अपने पैरों पर खड़े रहकर ना दिन देखा ना रात और कार्यक्रम को सफल बनाया।

अब समय है कि हम आने वाले वर्षों में इस लहर को बनाए रखें और कुछ ही वर्षों बाद जब महाविद्यालय का स्वर्ण जयन्ती वर्ष मनाया जाये तो वह आयोजन इससे भी तीन गुना बड़ा हो। जो आयोजन युगों-युगों तक याद रखा जाये।

**– सर्वज्ञ भारिल्ल, जयपुर**

## वाह ! वाह ! और वाह !...

समयसार मण्डल विधान शाश्वत सिद्धभूमि तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में अभूतपूर्व धर्मप्रभावना के साथ निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

विधान में 1008 इन्द्र-इन्द्राणियों का एक साथ बैठकर पूजा करने का दृश्य अपूर्व और प्रत्येक साधर्मी को रोमांचित करने वाला था। विधान में प्रत्येक पूजा को अर्थ सहित समझाते हुए आगे बढना बड़ा ही हृदयग्राही और भावपूर्ण रहा। सम्पूर्ण समयसार का स्वाध्याय पूजा-विधान के माध्यम से होना विशेष बात रही।

आदरणीय अभयजी शास्त्री, शान्तिकुमारजी पाटील, राकेशजी शास्त्री, संजीवजी गोधा और सुनीलजी जैनापुरे द्वारा विधान के बीच में जो समयसारजी के रहस्यों का उद्घाटन किया गया वह अपने आपमें अद्भुत था।

रात्रिकालीन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का चुनाव करना, फिर उनकी रूपरेखा तैयार करके उन्हें जीवंत तरीके से जो प्रस्तुत किया गया, उसे देखकर मन से यह निकले बिना नहीं रहा कि वाह ! वाह ! और वाह ! सचमुच वैराग्य महाकाव्य नाटक, संगीत संध्या और डॉक्यूमेन्ट्री के माध्यम से जो परोसा गया वह विशेष था। स्वर्ण जयन्ती वर्ष समारोह टीम द्वारा बहुत मेहनत से आवास, भोजन, यातायात आदि की सुन्दर व्यवस्था की गई। टीम को दिल से बधाइयाँ।

**– राजेश शास्त्री, शाहगढ**

## जीवन का गौरवपूर्ण महोत्सव...

शाश्वत सिद्धक्षेत्र पर सिद्ध प्रभुओं के सान्निध्य में समयसार के माध्यम से अपने को सिद्ध समान शुद्ध सिद्ध करने, अनुभव करने के अपूर्व अवसर का साक्षी होना जीवन का गौरवपूर्ण महोत्सव हुआ।

व्यवस्थाओं की सुव्यवस्थितता और 'पहले आप' ने वात्सल्य की मिसाल कायम की। साथ में कार्यकर्ताओं के प्रति सहयोगीपने का उपकार अनुभवन उनके उत्साह को द्विगुणित करने में कारगर रहा।

महोत्सव में शामिल होकर धन्यता अनुभव की।

**– राकेश जैन शास्त्री, दिल्ली**

## सोने पर सुहागा...

'सोने पर सुहागा' यह कहावत तो बहुत बार सुनी पर चरितार्थ होते पहली बार देखी। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का स्वर्ण जयंती वर्ष और शिखरजी में समयसार विधान - हुआ न सोने पर सुहागा।

समयसार अशरीरी होने का ग्रन्थ, सम्मेदशिखर अशरीरी होने का स्थान, उस पर समयसार भारिल्ल द्वारा रचित समयसार विधान हुआ न सोने पर सुहागा।

शाश्वत तीर्थधाम पर सहस्र विद्वान इन्द्रों की उपस्थिति में स्वातम रस का पान कराने वाला यह कार्यक्रम अद्वितीय अविस्मरणीय रहा।

**– निकलेश शास्त्री, दलपतपुर**

## न भूतो न भविष्यति...

हमारे जीवन में परिवर्तन लाने वाली एवं सत्य का मार्ग बताने वाली संस्था श्री टोडरमल स्मारक भवन जो कि विगत 50 वर्षों से समाज में जैन तत्त्वज्ञान एवं संस्कारों को जन-जन में पहुंचाने का कार्य कर रहा है, ऐसी जैन तत्त्वप्रचारक संस्था के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के अवसर पर सम्मेदशिखर में आयोजित श्री समयसार मण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एक अभूतपूर्व अनुभव रहा। मुझे इस अविस्मरणीय कार्यक्रम में एक कार्यकर्ता के रूप में जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ। वास्तव में यह कार्यक्रम हमारे हृदय में बहुत समय तक बसा रहेगा; क्योंकि समयसार का मर्म बताने वाला समयसार विधान, शान्तिजी भाईसाहब और संजीवजी गोधा द्वारा विधान की बीच में लाईन टू लाईन अर्थ बताना, तीर्थराज सम्मेदशिखर की सामूहिक वन्दना, विद्यालय काल के अपने सभी पुराने भूले-बिछड़े साथियों से सुखद मिलन की अनुभूति, 10 हजार मुमुक्षुओं का सत्समागम - सब कुछ अविस्मरणीय था; अद्भुत था स्वर्ण जयन्ती वर्ष का यह कार्यक्रम।

**– नवीन शास्त्री, फिरोजाबाद**

## कविता...

स्वर्ण जयन्ती वर्ष मना, सिद्धनगर में आज।
नहीं कभी ऐसा हुआ,
सुन्दर अद्भुत काज।
दस हजार भवि जन जुड़े,
अनुमोदन के काज।
एक एक प्रमुदित हुआ,
डॉक्टर साब से आज।
धन्य समर्पण गोदिकाजी का, जिनने बीज इसका रोपा।
धन्य समर्पण डॉक्टर साब का,
जिनने इसको हर क्षण पोषा।
धन्य एक एक साधर्मी,
जिनने इसको है सीचा।
धन्य धन्य एक एक विद्यार्थी, जिनने यहाँ धर्म सीखा।
जिनशासन का ध्वज सब मिलकर,
देखो अब फेहरा रहे।
चार गति का चक्र मिटाकर,
सबको विधि सिखा रहे।
पंचम काल में मील का पत्थर,
बनी संस्था स्मारक।
भव्य जीव की शरण स्थली,
बनी संस्था स्मारक।
सदा रहे जीवित संस्था,
बनते रहे विद्वान।
आप तरें तारें सदा,
सभी बनें भगवान्।

**– श्रेणिक जैन, जबलपुर**

## सफल आयोजन – सफलतम प्रयोजन...

पण्डित टोडरमल स्मारक के इतिहास में जिन तारीखों को स्वर्णिम अक्षरों में अंकित किया जायेगा वे हैं 9/10/2016 से 14/10/2016। स्वर्ण जयन्ती का उपलक्ष्य और ''समयसार महामंडल विधान एवं आध्यात्मिक शिविर'' का आयोजन। तीर्थंकरों के चरणों की धूलि को कण-कण में समेटे हुए शिखरजी की पावन धरा। सिद्धहस्त मनीषियों का समागम, विधानाचार्यों के मधुर स्वर और जिनवाणी माँ का आँचल। मैं नहीं समझता कि इनसे सुन्दर एवं विशुद्ध संयोगों का मिलन कहीं और संभव है। ऐसे सम्मोहक वातावरण में आत्मलाभ प्राप्त करने पधारे हुए, परस्पर वात्सल्य को प्रणीत करते हुए 10 हजार से अधिक मुमुक्षु। ऐसा लग रहा था मानो सिद्ध भगवंत और भव्यों के बीच के अंतर को निरंतर से भरने की घड़ी आ पहुंची हो।

उदयाचल से सूर्य के आरोहण करते ही जिनेन्द्र पूजन, उसके बाद जिनवाणी के रहस्यों को उद्घाटित करने वाले विद्वानों के 'विकार-विरेचक' प्रवचन, फिर मध्याह्न में भवक्लांत जगज्जनों के लिये आश्रयरूप ग्रंथाधिराज समयसार का महामंडल विधान, फिर सायंकाल में क्षीणमोह जिन का गुणानुवाद, फिर पुन: ब्रह्म में संचरण करते गुरुजनों का तात्त्विक उपदेश और फिर मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम - ये थी हमारी 5 दिनों की दिनचर्या। अंतिम दिवस भी सभी साधर्मीजनों मित्रों एवं विद्वानों के साथ पर्वतराज की अद्भुत वन्दना जो जीवन पर्यन्त विस्मृत ना हो सकेगी।

कुछ अन्य विशेषताएं थीं, जिनका यहाँ स्मरण ना करना अन्याय होगा। चाहे मोक्षमार्ग के प्रकाशक आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी के जीवन को दर्शाने वाला एवं उन्हीं के पदचिह्नों पर चलकर पूरे विश्व में तत्त्वज्ञान की अतिशय धारा बहाने वाले पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के प्रारम्भ को दर्शाने वाला नाटक हो या आदरणीय छोटे दादा डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का 18 वर्ष की आयु से प्रारम्भ होकर 81 वर्ष की आयु पर समाप्त होने वाले वैराग्य महाकाव्य का मंचन - हर कार्यक्रम अपने आपमें अद्भुत एवं अतुल्य था। और समस्त विद्वत्सेना को जिस पर गर्व हो ऐसी पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की कार्यशैली, उसकी तत्त्व-समर्पणता एवं आगम-न्याय-अध्यात्म की प्रज्ञाक्षीणियों से तराशकर एक सामान्य बालक को किस प्रकार तत्त्ववेत्ता बनाया जाता है या यूं कहें कि एक पत्थर की मूर्ति में किस प्रकार प्राण फूंके जाते हैं - इन भावों को प्रदर्शित करती ''समय की ओर'' जो फिल्म दिखाई गई, उसने मानस में आजीवन तत्त्वप्रचार के प्रति समर्पणता के भाव भर दिये।

प्रथम दिवस जब मध्याह्न में विधान के लिये पहुंचा तो सोचा कि दोपहर में अधिक संख्या नहीं होगी और आगे बैठने को मिल जायेगा; परन्तु मंडप में उपस्थित जनसमूह को देखकर आँखें आश्चर्य से फटी रह गयीं। लगभग पूरा जन समुदाय 10 हजार की संख्या के साथ विधान में उपस्थित था और इंद्र होने पर भी लगभग सबसे पीछे बैठना पड़ा। जिस अनुशासन से पाँचों दिन विधान हुआ, जिस प्रकार अपार जनसमूह ने उपस्थिति दर्ज करायी, जिसप्रकार मंचासीन मीमांसकों ने तत्त्व की मीमांसा की और मधुर भक्ति-गीतों के साथ जो तत्त्व की धरा बही उसका वर्णन शब्दों में करना समुद्र तैरने जैसा है।

इसप्रकार के बृहद् कार्यक्रमों में व्यवस्था बनाए रखना प्राय: अत्यधिक कष्टदायी होता है; परन्तु दूरदृष्टाओं के अनुभव, कार्यकर्ताओं के समर्पण और सभी मुमुक्षुओं की वात्सल्य शक्ति ने इस कार्यक्रम में ऐसे कीर्तिमान स्थापित किये जिन्हें पुन: प्राप्त करना अन्य लोगों एवं संस्थाओं के लिये मुश्किल होगा। आयोजकों ने हृदय से सभी को आमंत्रित किया, आगंतुकों के आवास, भोजन, यातायात की प्रेम एवं सम्मानपूर्वक व्यवस्था की और अतिथियों ने भी धर्मलाभ को मुख्य करके अन्य नगण्य अव्यवस्थाभासों को गौण कर दिया।

इस स्वर्ण जयंती के सफल कार्यक्रम ने सचमुच ही पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के मंदिर पर स्वर्ण-कलश स्थापित कर दिया। ये एक ऐसा आयोजन था जहाँ ना भोजन की चिंता थी, ना आने जाने की आपाधापी, ना सुरक्षा का भय और ना ही कोई अन्य विकल्प। बस सुबह से रात तक एक ही बात - तत्त्व विचार और तत्त्वचर्चा।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के सभी विद्वान, समस्त आयोजक समिति एवं सभी कार्यकर्त्ताओं को नमन करता हुआ, अभिनन्दन प्रेषित करता हुआ विस्तार भय से विराम लेता हूँ। **- ज्ञायक शास्त्री, मुम्बई**

## अति उत्तम आयोजन...

शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी में सिद्धों की गोद में समयसार मण्डल विधान का आनंद अशरीरी होने का पथप्रदर्शक करने वाले ज्ञानियों का समागम तथा अद्भुत कार्यक्रमों की गतिविधियों ने इस भव्य आयोजन में चार चाँद लगा दिये। इस अवसर पर सभी आत्मार्थीजनों के साथ सामूहिक वंदना का आयोजन मेरे जीवन के अपूर्व क्षण थे। यह आयोजन सभी दृष्टि से बहुत ही उत्तम था। हम सबकी कल्पना से भी ज्यादा आनंददायक यह स्वर्ण जयंती समारोह रहा।

**- नवीन जैन, उज्जैन**

## आनंद का महोत्सव...

शाश्वत तीर्थाधिराज सम्मेदशिखर पर यह समयसार विधान का महोत्सव एक आनंद का महोत्सव था; सिद्धों के साथ सिद्ध बनने का अद्भुत समागम था।

आयोजन में मुझे जिनवाणी के अद्भुत समागम के साथ राजा श्रेयांस भोजनालय में सहयोग का अवसर प्राप्त हुआ, जिसका मैं आभार व्यक्त करता हूँ। **- रजतकांत शास्त्री, खनियांधाना**

## जैनधर्म का डंका बजाया...

जैसे किन्हीं 2 नदियों का एक जगह मिलना संगम कहलाता है और वह अपने आपमें महत्वपूर्ण स्थल बन जाता है। ऐसे ही एक तो श्री सम्मेदशिखरजी जो कि जैनियों की काशी है, शाश्वत सिद्धक्षेत्र है, 20 तीर्थंकरों की निर्वाण स्थली है और एक पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जो कि अपने आपमें एक गौरव है, मुमुक्षुओं की अपनी एक अलग पहचान है और ऐसा ही अनूठा सफल और व्यवस्थित कार्यक्रम शिखरजी में करके पूरे भारत देश में जैनधर्म का डंका बजाया है। सम्पूर्ण भारत में गुरुदेवश्री और डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अमूल्य योगदान को जन-जन तक पहुंचाने का जो काम स्मारक द्वारा किया जा रहा है, वह सच में अद्वितीय है।

शिखरजी जैसी जगह में जहाँ अपार समस्याओं विपदाओं के बीच 10 हजार लोगों की आवास भोजन आदि की इतनी उत्तम से उत्तम व्यवस्था करना सच में उद्भुत है अद्वितीय है। इन सबके लिये संपूर्ण स्मारक टीम को जितनी बधाई दे उतना ही कम होगा। और जहाँ पीयूषजी और शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जैसे भाईसाहब का मैनेजमेन्ट हो वह कार्यक्रम सफल होगा ही होगा।

मुझे आज इतनी प्रसन्नता हो रही है कि ऐसे ट्रस्ट का मैं भी एक अभिन्न अंग हूँ और ऐसे विद्यालय में मैंने ज्ञान अर्जित कर आज मैं इस योग्य बना हूँ।

मुझे जन्म तो मेरे माता-पिता ने दिया है; लेकिन संस्कार, शिक्षा और भगवान बनने का संकल्प दिलाने वाला यह मेरा प्यारा संस्थान पण्डित टोडरमल

स्मारक ट्रस्ट जयपुर ही है। मैं हमेशा आभारी रहूँगा और इसकी उन्नति में हमेशा तन-मन-धन से समर्पित रहूँगा। **– विवेक जैन शास्त्री, पिड़ावा**

**मेरी भावना...**

श्री सम्मेदशिखरजी का स्वर्ण जयंती का यह अवसर वास्तव में मुमुक्षु परिवार के लिये एक अद्भुत प्रेरणा बना जैसा कि सभी लोगों से सुना है। कुछ कारण ऐसे रहे कि मेरा आना नहीं हो पाया जो मेरा दुर्भाग्य रहा, जो कि हमेशा याद रहेगा।

ऐसी धर्म की प्रभावना होना पंचमकाल की एक विशेष उपलब्धियों में से एक है। जहाँ साधर्मियों का मिलन, सिद्धों की बात, सिद्धों से ही मुलाकात, सिद्धों का गुणगान सिर्फ और सिर्फ एकमात्र ध्येय रहा जो कि अपूर्व और अभूतपूर्व रहा।

बस एक ही भावना भाता हूँ कि जल्द से जल्द एक बार और ऐसी खुशखबरी मिले ऐसा स्वर्ण जयंती समारोह फिर मनाने को मिले और उसमें मैं सहभागी अवश्य रहूँ - ऐसी पवित्र भावना करता हूँ।

**– आकाश शास्त्री, खनियांधाना**

**सुप्त संवेदनाएं झंकृत हुई...**

समयसार विधान, तीर्थराज सम्मेदशिखर, स्वर्णजयंती महोत्सव; वास्तव में सभी सुप्त संवेदनाओं को झंकृत करने का एक अहम प्रयास था, जो अपने इस उद्देश्य में दो सौ प्रतिशत सफल हुआ है। निर्वाणधरा पर, हमारी निर्माण स्थली का आयोजन, एक बार फिर हममें से कई के पुनर्निर्माण का जरिया बन उठा। जहाँ से फिर जागी हममें वही चिंगारी, जिसे संजोये हम बिताते थे खुशनुमा पल अपनी निर्माण धरा पर।

'न भूतो न भविष्यति' कहकर मैं आयोजन की बाहरी भव्यता के प्रति कोई अतिरेकपूर्ण बात नहीं कहूंगा; क्योंकि इससे अधिक भव्यता रही भी है और आगे के आयोजनों में देखने को मिलेगी भी। इस आयोजन में कोई कमी न रही हो ऐसा भी नहीं है। वास्तव में इतने बड़े प्रयासों का आकलन इन ऊपरी कमियों से नहीं; बल्कि उद्देश्यों से किया जाना चाहिये। जिन उद्देश्यों को लेकर हम जुड़े थे या जिस आंतरिक प्रेरणा ने हमें इस आयोजन का हिस्सा बनने के लिये प्रेरित किया था, उस उद्देश्य पर प्रश्नचिह्न खड़े नहीं किये जा सकते।

अस्तु, इस तरह के आयोजनों की वर्तमान और भविष्य दोनों में आवश्यकता है; क्योंकि हमारा परिवार अब इतना बढ गया है कि हमारे बीच रहने वाली भौतिक दूरी, हमारी भावनात्मक दूरी की भी वजह बन जाती है। 'नजर से दूर, दिल से दूर' उक्ति पुरानी है; पर चरितार्थ हमेशा होती है। इसलिये अच्छा है कि एक दूसरे की नजरों में बने रहें, तो दिल में भी बने रहेंगे और हमारे इस तरह के मिलन से राख के भीतर दबी चिंगारी को भी हवा मिलती रहेगी। - AH$a "Ae', XaXeZ ^mnmb

**!! सभी को बहुत-बहुत साधुवाद !!**

जज्बात हैं बहुत अभिव्यक्ति नहीं, अभिव्यक्त करूं कैसे वह सब, अनुभव जो किया है हम सबने, थोड़ी ही सही पर करता हूँ कोशिश मैं अभिव्यक्ति की, हुआ है सफल, सार्थक, परिश्रम पाकर वह लक्ष्य जो लेकर चले थे हम, धन्य था वह साधर्मी मिलन जिसने जगाया और जोड़ा अंतर्मन, समयसार विधान ने जागृत की अहमियत पढने की समयसार परमागम, पढने की पढाने की, समझने की समझाने की, जन-जन तक पहुंचाने की, वे सुप्त भावनाएं जगाने की जिन्हें कभी हमने सुव्यवस्थित मन से बुना था, गढा था, संजोया था ज्ञानतीर्थ की छाया में। प्रेरित हुआ है रोम-रोम हमारा इस आयोजन में, बहुत-बहुत मेरा साधुवाद शामिल होने को समागम में !! **– संयम शास्त्री, सिलवानी**

**खुशी को व्यक्त करना असंभव है...**

शिखरजी जैसी पावन धरा, समयसार जैसा उत्कृष्ट विधान और निरंतर समयसार का ही अध्ययन करने कराने वाले हजारों मुमुक्षु भाई जब सब मिलकर एक साथ मिलकर एक साथ सिद्धों की भूमि के तले, सिद्ध बनने की भावना से सिद्ध स्वरूप की आराधना कर रहे थे, वे दृश्य जीवनभर के लिये हृदय में असीम छाप छोड़ गये हैं जो नित प्रतिदिन समयसार को भुनाने की याद दिलाते हैं भुलाने की नहीं। ये दोहे मानो उसी दृश्य को देखकर लिखे गये हो -

**है समयसार बस एक सार है समयसार बिन सब असार।**
**तुम समयसार हम समयसार है समयसार बिन सब असार।।**

इतने उत्कृष्ट आयोजन की व्यवस्थाओं में मुझे सहयोग करने का अवसर भी मिला। सामान्यतया होता यह है कि व्यवस्थाओं में सहयोग करने वाला वहाँ होने वाले कार्यक्रमों से अछूता रह जाता है; परन्तु मैं उन भाग्यशालियों में से हूँ कि जिसे प्रात: से सायंकाल तक होने वाले प्रत्येक कार्यक्रम का पूरा-पूरा लाभ मिला और उन अद्भुत विधान के पल को विश्वव्यापी बनाने का जन-जन तक पहुंचाने का जो अनुभव है, खुशी है, उसको शब्दों में व्यक्त कर पाना संभव नहीं है। **– सुदीप जैन शास्त्री, इन्दौर**

**Most Amazing Event...**

Pandit Todarmal Smarak Trust Golden Jubilee event in Teerthdham Shikharji has been one of the most interesting and isnpiring events of my life. I feel very proud to be a part of such grand event in my student life. I, not only learned various ways of preaching tatvgyan but also managment & leadership based soft-skills. I wish that such events should occur every year for our overall development and spreading of real religious knowledge to every nook and corner of this world. I feel proud to be a part of this memorable event and of this great organization. I will like to thank shuddhatam ji Bharill &Piyoush ji Shastri as being with them I have learnt a lot. **- Gyayak Jain (Shastri-II year)**

**Opportunity to listen great scholars...**

Thanks to you and your entire team for kind hospitality and care during Golden Jubilee Celebration of Pt. Todarmal Smarak Trust, Jaipur. The entire event was meticulously planned, organised and well articulated. The event accorded a unique opportunity to meet our great scholars and listen to them.

Once again my sincere appreciation for great show. I am sanguine that Pt. Todarmal Smarak Trust, Jaipur would continue the concerted efforts and give further mipetus in increasing Jain scholars in the society. **- Lt Col PS Navalgund**
**(Assistant Adjutant General)**

**पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्वर्ण जयंती के अवसर पर श्री रवीन्द्र मालव** (राष्ट्रीय अध्यक्ष-अ.भा.जैन पत्र सम्पादक संघ, शिरोमणि संरक्षक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष-अ.भा.दि.जैन परिषद्) **लिखते हैं कि –**

**आगम के प्रति प्रतिबद्धता, मूल आम्नाय का संरक्षण, जैन विद्वानों के सम्मान और जिनालयों में प्रवचन प्रथा का पुनर्स्थापन कर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने –**

## श्रमण संस्कृति को पुनर्जीवित किया

पण्डित टोडरमलजी जैसे मनीषी जैन पण्डित की पावन स्मृति में 67 वर्ष पूर्व जब जयपुर में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्थापना की गई होगी, तब इसके संस्थापकों के मन में जो आस और विश्वास रहा होगा, वह उनकी कल्पनाओं से भी कई गुना सफल होगा, इसकी शायद ही कोई कल्पना उनके मन में रही हो।

यह वह समय था जब आगम के प्रति प्रतिबद्धता, मूल आम्नाय के प्रति निष्ठा का क्षरण आरम्भ होने लगा था। जिनालयों में प्रवचनों की नियमितता कम होने लगी थी, वैदिक संस्कृति के प्रभाव से कर्मकाण्ड बढने लगा था, साधु और श्रावक दोनों स्तरों पर शिथिलाचार पैर पसारने लगा था, विद्वानों का स्तर गिर रहा था, अनेक विद्वान शिथिलाचारी साधुओं के साथ मिलकर जैनधर्म के वैदिकीकरण, यंत्र-मंत्र-तंत्र व कुदेवों की पूजा आदि के जाल में फंसाकर समाज को वैदिकीकरण की ओर ढकेल रहे थे, तब टोडरमल स्मारक ट्रस्ट में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जैसे दैदीप्यमान नक्षत्र का उदय हुआ और देखते ही देखते प्रथम अर्द्ध शताब्दी में ही पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट दिगम्बर जैन परम्परा के आगम और मूल आम्नाय की पाठशाला और शिक्षण संस्थान से प्रारम्भ होकर जैन पण्डितों और विद्वानों की टकसाल तथा जन-जन के लिये उपयोगी, सरल, सुबोध एवं सुपाठ्य साहित्य की फैक्ट्री बन गया। ट्रस्ट ने सम्पूर्ण देश में ही नहीं वरन् विदेशों में भी दिगम्बर जैन आगम और मूल आम्नाय का अभूतपूर्व संरक्षण, संवर्द्धन और पोषण किया। यहाँ से निकले विद्वान देश-विदेश में फैलकर छा गए, जिनालयों में शास्त्र प्रवचन व विद्वत्गोष्ठी की प्रथा पुनर्जीवित हुई, आगम और मूल आम्नाय के प्रति व्यापक स्तर पर ज्ञान का प्रसार हुआ।

अपने इस स्वरूप और अपनी अभूतपूर्व उपलब्धियों के कारण पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट दिगम्बर जैन समाज का शीर्षस्थ ज्ञानतीर्थ बन गया है। इसकी स्थापना की अर्द्धशताब्दी पूर्ण होने पर मेरी कामना है कि ट्रस्ट दिन-प्रतिदिन चतुर्मुखी उन्नति कर श्रमण ज्ञानालोक को और अधिक तीव्रगति से प्रकाशित करता रहे तथा आगम और मूल आम्नाय का संरक्षण करे।

## हार्दिक बधाई !

आगरा जैन समाज की सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्था श्री दिगम्बर जैन शिक्षा समिति की बैठक में प्रमुख उद्यमी एवं प्रसिद्ध समाजसेवी श्री प्रदीपकुमारजी जैन (पीएनसी) को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया। इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

## विद्वत्परिषद् की बैठक में प्रस्ताव

**सम्मेदशिखरजी (झारखंड) :** यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्वर्ण जयंती के अवसर पर दिनांक 11 अक्टूबर को अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद् की कार्यकारिणी समिति की बैठक विशाल जनसमूह के मध्य डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में संपन्न हुई।

समन्वय वाणी जून खख 2016 मूलाम्नाय विशेषांक के पृष्ठ 2 पर श्री संतोष सिंघई (अध्यक्ष-श्री सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर) के नाम से निम्न समाचार प्रकाशित हैं -

''अ.भा.दि. जैन विद्वत्परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल का गढाकोटा पंचकल्याणक के पूर्व 24 दिसम्बर 2015 को सपत्नीक कुण्डलपुर तीर्थक्षेत्र पर दर्शनार्थ पधारना हुआ। आपने तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा हो रहे जिनमंदिर के निर्माण पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उसे शीघ्र पूरा करने की भावना व्यक्त की। आपने चर्चा के दौरान मूलाम्नाय (तेरापंथ) के उन्नयन व विकास हेतु अपना हर संभव पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। श्रीक्षेत्र के पदाधिकारियों द्वारा आपका तिलक, माला के साथ सम्मान किया।''

विद्वत्परिषद् की कार्यकारिणी समिति, विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष डॉ. भारिल्ल की उक्त भावनाओं की सर्वसम्मति से अनुमोदना करती है और प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ (बड़े बाबा) के नव निर्माणाधीन मंदिर की पूर्णता हेतु दिगम्बर जैन समाज की सभी संस्थाओं, मंच (जैन संस्कृति रक्षा मंच), विद्वत्गण और समाज से अनुरोध करती है कि सद्भावपूर्वक सर्वमतभेद विस्मृतकर और कानूनी बाधाएँ समाप्त कर कुण्डलपुर के, बड़े बाबा के निर्माणाधीन भव्य मंदिर के निर्माण में सहयोग प्रदान करें और भगवान महावीर का दिगम्बर जैन मूल आम्नाय की परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखने में सहयोग करें। उपस्थित जनसमूह ने करतल ध्वनि से इसका समर्थन/अनुमोदना की। **प्रस्तावक – डॉ. राजेन्द्र कुमार बंसल (कार्याध्यक्ष)**

**आगामी कार्यक्रम...**

## गोम्मटसार शिविर

इन्दौर (म.प्र.) में दिनांक 23 दिसम्बर 2016 से 1 जनवरी 2017 तक गोम्मटसार के विशेष अध्ययन हेतु शिक्षण शिविर लगाया जा रहा है। इसमें पण्डित विकासजी छाबड़ा द्वारा प्रोजेक्टर, चार्ट, टेबल एवं बोर्ड के माध्यम से करणानुयोग के विषय को सरलता से समझाया जायेगा। बाहर से पधारे सभी साधर्मियों की आवास व भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क रहेगी। इस हेतु 10 दिसम्बर के पूर्व रजिस्ट्रेशन करवाना अनिवार्य है। अधिक जानकारी हेतु 9407286603, 9827039492 (श्रीमती सोनाली जैन), 9424414796 (विमलचंद जैन), 9407447193 (श्रीमती सारिका जैन) से संपर्क करें।

**पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–**
**वेबसाईट – www.vitragvani.com**
**संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई**
**Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com**

विभिन्न विमोचन
कार्यक्रम
सम्मान ग्रहण करते कार्यकर्त्तागण

17 नवम्बर 2016, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

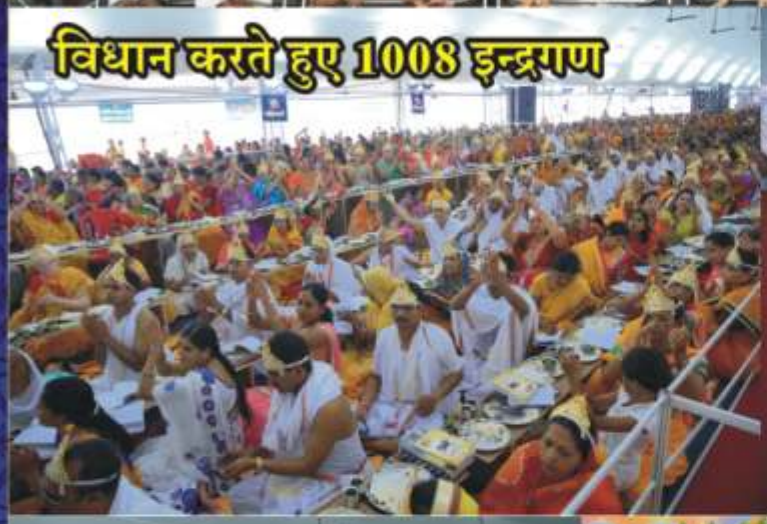

प्रकाशन तिथि : 13 नवम्बर 2016

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-mail :
ptstjaipur@yahoo.com